पत्रिका

सत्र २०२२-२३

राजकीय - संस्कृत - महाविद्यालयः सुन्दरनगरम्

शिलामञ्जरी

100 years

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥

100
Glorious years
of
learning and excellence,
and
still counting!

हिमाचल प्रदेश सरकार

सुखविंदर सिंह सुक्खू
मुख्यमंत्री
हिमाचल प्रदेश

"सन्देशः"

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, सुन्दरनगर अपनी पत्रिका 'शिलामञ्जरी' का प्रकाशन करने जा रहा है, इसके लिए मैं महाविद्यालय के प्राध्यापकों व छात्रों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

संस्कृत को भारतवर्ष की अनेक भाषाओं और बोलियों की जननी होने का गौरव प्राप्त है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आत्मा है। हमारे वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि संस्कृत में ही लिखे गए हैं। मैं आशा करता हूं कि महाविद्यालयीय पत्रिका 'शिलामञ्जरी ' पत्रकारिता के उच्च मानकों पर खरा उतरेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सुखविंदर सिंह सुक्खू

हिमाचल प्रदेश सरकार

रोहित ठाकुर
शिक्षामंत्री
हिमाचल प्रदेश

"सन्देशः"

यह प्रसन्नता की बात है कि राजकीय संस्कृत महाविद्यालय , सुन्दरनगर अपने स्थापना के 100 वर्षों के उपलक्ष्य पर अपनी महाविद्यालयीय पत्रिका 'शिलामञ्जरी' का प्रकाशन करने जा रहा है, इसके लिए मैं महाविद्यालय के प्राध्यापकों व छात्रों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

संस्कृत भाषा देववाणी कहलाती है। यह न केवल भारत की महत्त्वपूर्ण भाषा है अपितु विश्व की प्राचीनतम व श्रेष्ठतम भाषा मानी जाती है। यह शास्त्रीय भाषा हमारी पुरानी सांस्कृतिक विरासत के एक बड़े हिस्से का भंडार भी है। इस भाषा के संरक्षण, संवर्धन, प्रचार-प्रसार और विकास के लिए राज्य सरकार भी प्रयासरत है।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए संस्कृत भाषा और भाषाशास्त्र के संचार का आदर्श माध्यम बनेगी।

मैं पत्रिका प्रकाशन के लिए महाविद्यालय और इससे जुड़े लोगों को बधाई देता हूं।

रोहित ठाकुर

रोहित ठाकुर

हिमाचल प्रदेश सरकार

राकेश कंवर
प्रधान सचिव (शिक्षा)
हिमाचल प्रदेश

"सन्देशः"

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है राजकीय संस्कृत महाविद्यालय , सुन्दरनगर अपने स्थापना के 100 वर्षों के उपलक्ष्य पर अपनी महाविद्यालयीय पत्रिका 'शिलामञ्जरी' का प्रकाशन करने जा रहा है, जो एक प्रशंसनीय पग है।

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आत्मा है व विश्व की सबसे प्राचीन भाषा होने के साथ-साथ समस्त भारतीय भाषाओं की जननी भी है। संस्कृत केवल मात्र एक भाषा ही नहीं है, अपितु संस्कृत एक विचार है, संस्कृति है और संस्कार है। संस्कृत पूर्णतया वैज्ञानिक एवं सक्षम भाषा है, जिसके व्याकरण में कोई भी त्रुटि नहीं है, इसी कारण विश्व भर के भाषा विशेषज्ञों के मतानुसार संस्कृत कम्प्यूटर के उपयोग के लिए भी सर्वोत्तम भाषा है। राज्य सरकार ने संस्कृत को द्वितीय राज भाषा का दर्जा दिया है और प्रदेश सरकार इस भाषा को और अधिक व्यावहारिक व सरल बनाने का प्रयास कर रही है।

मेरी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

राकेश कंवर

हिमाचल प्रदेश सरकार

डॉ० केशवानन्द कौशल:
सचिव
हिमाचल-संस्कृत-अकादमी
(हिमाचलप्रदेशसर्वकारः)

"सन्देशः"

संस्कृति सन्सकृताश्रिता इति भारतीय सस्कृतेः मूलसिद्धान्तमनुसृत्य संस्कृत-संस्कृति- संस्कारजन्य भारतीयजनजीवनस्य संरक्षणाय संवर्धनाय च समर्पितजीवनेन तत्कालीनसुकेतरियासत (वर्तमान सुन्दरनगरस्य) प्रजावत्सलेन राजपरिवारेण पुराणनगरे (पुराना बाजार इत्याख्ये) सनातनधर्मसभासंरक्षणे 1923 ख्रीष्टाब्दे एकः संस्कृतविद्यालयः "आचार्य सूरजमणि सूरि" स्वनामधन्यै महोदयानाम् आचार्यत्वे समारब्धः। तदवधिः आचार्य शालग्रामादिभिः बहभिः राचार्यैः गत शतवर्षेभ्यः: सहस्त्रैरपि छात्र-छात्राभिः स्वकीयमध्ययनं सम्पूर्ण महाविद्यालयोऽयं देशे-विदेशेष्वपि ख्यातप्रतिष्ठः कृतः तथा च वर्तमानसमये महाविद्यालयो चायं हिमाचलसर्वकारसंरक्षणे निरन्तरं स्वलक्ष्यं प्रतिप्रवर्धमानो वर्तते । एतदर्थं वर्तमानसमये प्राचार्य पदमलङ्कर्वाणः डा० खुशवन्तसिंहः, सहयोगिनः आचार्याप्रवराः, अधिकारिणः कर्मचारिणश्च वर्धापनीयाः सन्तीति।

पुनः बहुकालपूर्वम् आचार्य प्रेमसिंह शौण्डा महोदयानां प्राचार्यत्वे छात्राणां बौद्धिक- मानसिक-रचनात्मकबोधज्ञानाय छात्राध्यापकैः सम्मिल्य महाविद्यालयस्य शिलामञ्जरी संस्कृतपत्रिका प्रकाशिता। 2023 तमेऽस्मिन् महाविद्यालयस्य शताब्दीवर्षेऽस्याः पत्रिकायाः प्रकाशनं छात्राध्यापकैः क्रियते । एतदर्थं ते छात्राध्यापकाः प्राचार्य महोदयाश्च पौनः पुन्येन वर्धपनार्हाः सन्तीति । सर्वेषांकृते एतदेव मम सन्देशः-

उत्तिष्ठन्तु भारतीयाः, सज्जाः भवन्तु वै जनाः।
संस्कृत-संरक्षणमेव संस्कृतिसंरक्षणं खलु ॥
इति ।

डॉ० केशवानन्द कौशल:

सोहन लाल ठाकुर
पूर्व विधायक एवं CPS
हिमाचल प्रदेश

"सन्देशः"

अपार हर्ष का विषय है कि राजकीय संस्कृत महाविद्यालय सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०) अपनी महाविद्यालय पत्रिका शिलामञ्जरी का प्रकाशन करने जा रहा है।

संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार से भारतीय संस्कृति पोषित होती है और इसकी रक्षा की जा सकती है। इस भाषा को जीवन्त रखना हम सबका परम कर्त्तव्य है। योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, रासायन शास्त्र, कृषिविज्ञान, शिल्पविज्ञानादि अनेक ज्ञानवर्धक एवं मानव जीवन के लिए उपयोगी ज्ञानराशि संस्कृतभाषा में समाहित है। संस्कृत भाषा में सन्निहित वैज्ञानिकता को जानकर मनुष्य जीवन को सफलतम बना सकता है।

मेरी शुभकामना है कि आपके महाविद्यालय की यह संरचनात्मक एवं प्रेरणात्मक क्रान्ति संस्कृत भाषा का संरक्षण करने में महत्वपूर्ण साबित होगी। महाविद्यालय को 100 वर्ष पूरा करने पर हार्दिक शुभकामनाँए।

सोहन लाल ठाकुर

डॉ0 लीलाधरवात्स्यायन:
पूर्व प्राचार्य
संस्कृतमहाविद्यालय संवर्ग

"सन्देश:"

राजकीयसंस्कृत-महाविद्यालय: सुन्दरनगरम् स्व स्थापनाया: शताब्द्यवसरे महाविद्यालयीयपत्रिकाया: प्रकाशनं कुर्वन्नस्तीति भृशं मोदामहे। मन्ये यत् त्रिंशतवर्षपूर्वमेतस्या: पत्रिकाया: प्रकाशन-विषयकं चिन्तनमारब्धमासीत् ; तदा स्व० श्री प्रेमसिंहशौण्डामहोदय: महाविद्यालयस्य प्राचार्यपदमलङ्कुर्वाणा आसन्। पत्रिकाया: नामधेयं किं स्यादेतस्मिन् विषये नैकैराचार्यैर्नामानि निर्दिष्टानि, मयाऽपि "शुकभूमिति" नाम निर्दिष्टमासीत् किन्तु प्राचार्यवर्याणां श्री प्रेमसिंहशौण्डामहाभागानामेव निर्दिष्टं नामधेयं "शिलामञ्जरी" इति सर्वकारस्य पत्रिकापञ्जीकरणविभागेन स्वीकृतम्। तथैतेनैव नाम्ना महाविद्यालयीय-पत्रिकाया: पञ्जीकरणं सञ्जातम्। तदारभ्य पत्रिकैषा निरन्तरं प्रतिवर्षं प्रकाशिता भवति स्म; किन्तु कतिपयेभ्य: वर्षेभ्य एतस्या: प्रकाशनं स्थगितमासीत्तत्रानेकानि कारणानि भवितुमर्हन्ति; किन्तु शताब्द्यावसरे शिलामञ्जर्या: प्रकाशनं महद् मोदावहम्। वस्तुतो विद्यार्थिषु बहव: प्रतिभाशालिनः स्वप्रतिभां प्रदर्शयितुमिच्छन्ति तेषां लेखनवैविध्यप्रतिभाया: प्रकाशने विवर्धने च महाविद्यालयीया: पत्रिका वैशिष्ट्येन मञ्जायते।

"शिलामञ्जर्या:" प्रकाशनावसरे माहाविद्यालयस्य च गौरवशालिन्या: शताब्द्यावसरे मदीया: हार्दा: शुभकामनाः।

डॉ० लीलाधरो वात्स्यायन:

डॉ० खुशवन्त सिंहः
प्राचार्यः
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय,
सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)

"प्राचार्यः सन्देशः"

सुविदितमेतत् यदाधुनिके युगे प्रचारस्य प्रसारस्य चानेकानि साधनानि वर्तन्ते। सर्वेषामेव भाषाणां विकासाय प्रसाराय व समाचारपत्राणि दैनिक-साप्ताहिक-पाक्षिक मासिक वार्षिक-पत्र-पत्रिकाः प्रसरन्ति चतुर्दिक्षु पवनइव । परन्तु एतत् सर्वे अवगच्छन्तु यद् एतेषु महाविद्यालयपत्रिका एकं विशिष्टं स्थानं प्राप्नोति।

महाविद्यालयीय पत्रिकाणां माध्यमेन सुयोग्य छात्र-छात्राणां देशस्य समाजस्य च प्रति दृष्टिमवतरति। अतः महाविद्यालयेषु पत्रिकाणां प्रकाशनमवश्यमेव भवितव्यम् । यस्यमाध्यमेन छात्राः निज भावान देशस्य समाजस्य सम्मुखे प्रकाशयेयुः। अस्माकं महाविद्यालयये 'शिलामञ्जरी" नामधेया महाविद्यालयीयत्वादियं पत्रिका विशेष रूपेण भारतीयसंस्कृतिमलंकरिष्यति । तदपि अस्यां पत्रिकायां संस्कृत-पहाडी-आंगल:-हिन्दीनाञ्च भाषाणामपिप्रभा स्वस्व स्थाने पाठकानां हृदयं प्रसभमाकर्षति मोहयति च । अस्यां पत्रिकायां छात्रै: निजेच्छानुसार निबन्धात्मकम्, इतिहासात्मक समस्यायुताः विचाराः हास्यव्यंग्यानि सुभाषितानि अन्योऽन्यानि लेखानि समर्पितानि । अस्याः सफलतायाः श्रेयः परिचुम्बते गुरूजनानेव । यतोहितेषामेवादर्शै: प्रेरणां प्राप्य चाद्येयं पत्रिका प्रकाश्यते। यैश्छात्रै: निजलेखानि प्रकाशनार्थं दतानि तान् प्रत्याभारं केवलं प्रकटयाम्यहम् । नाति दूरं सः समयः । यदेयं पत्रिका न तु-हिमाचले अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष विख्याता भविष्यति इति मे निश्चयः । 2023 इति वर्षे महाविद्यालयस्य शताब्दीवर्षेऽस्या: पत्रिकाया: प्रकाशनं शिक्षकै: छात्रै: च कृतम्। एतदर्थं महाविद्यालयस्य सर्वे छात्राध्यापका: धन्यवादं अर्हन्ति।

"पत्रिकाया: अस्या प्रसृतिकामये।"

डॉ० खुशवन्त सिंहः

वार्षिको वृत्तान्तः 2022-2023

प्राचार्य डॉ. खुशवन्त सिंह
राजकीय संस्कृतमहा विद्यालय: सुन्दरनगरम्, मण्डी (हि. प्र.)

उपोद्घात : भारतीय संस्कृति एवं सम्पूर्ण संसार के लिए आदर्शरूप विश्व गुरु भारत वर्ष की जन्मदात्री देववाणी संस्कृत भाषा के रक्षण एवं संवर्धन में प्रतिक्षण तत्पर एवं अग्रणी यह महाविद्यालय, सुकेत रियासत के तत्कालीन राजाओं की शास्त्र विषयक जिज्ञासाओं की शान्ति एवं सामाजिक सामञ्जस्य संस्थापन हेतु, हिमाचल प्रदेश की रमणीय उपत्यकाओं के मध्य 'छोटी काशी' के नाम से विख्यात मण्डी नगर में, महर्षि शुकदेव के द्वारा पावित एवं भगवान् श्री नृसिंह तथा मातृरूपा भगवती श्री त्रिपुरसुन्दरी के द्वारा दसों दिशाओं से अभिरक्षित क्षेत्र सुन्दरनगर में, ईसाब्द १९२३ से समाज कल्याण तथा शिक्षा के विकास के उद्देश्य से प्रगति के पथ पर अविराम कार्यरत है।

प्रदेश में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण उत्तर भारत में अपनी विद्वत्ता के गौरव की पताका से इस क्षेत्र के यश का सम्पूर्ण भारत वर्ष में शाश्वत प्रचार-प्रसार करने वाला यह संस्थान प्राचीन एवंनित्य नवीन ज्ञान के मूल स्रोत वेद से लेकर आधुनिक ज्ञान के पूर्ण परिचायक सङ्गणक तक सभी पारम्परिक एवं आधुनिक विधाओं के द्वारा 'अद्वितीय एवं सर्वजनमान्य विद्वानों के निर्माण तथा समाज की सेवा में समर्पण', इस समाज-जागरण रूपी ज्ञान यज्ञ को निरन्तर सञ्चालित करते हुए वर्षों से अखण्ड तप: साधना में पूर्णतया तल्लीन है। महाविद्यालय में स्थापना के समय कुछ ही की संख्या थी जो वर्तमान में बढकर ८८३ हो गई है। विकास के पथ पर अग्रसर होते हुए,महाविद्यालय ने अनेक उपलब्धिया अर्जित की है। महाविद्यालय ने न केवल संख्या वृद्धि दर्ज की है, अपितु शिक्षा मे गुणवत्ता लाने का भी प्रयास किया है। वर्तमान समय मे महाविद्यालय मे संस्कृत विषयों के साथ- साथ अन्य महत्वपूर्ण विषय जैसे अंग्रेज़ी, हिंदी, राजनितिशास्त्र व इतिहस आदि का भी अध्ययन किया जा रहा है।

आचार्य-वर्ग व कार्यालयी-कर्मचारी : महाविद्यालय में संस्कृत ज्ञान, विज्ञान के अध्यापन हेतु वेद, व्याकरण, ज्योतिष, दर्शन, साहित्य विषयों के छः पद सृजित हैं, इसके अतिरिक्त हिंदी व अंग्रेज़ी विषय के पद भी सृजीत सभी पदों पर आचार्य-वर्ग नियुक्त है, महाविद्यालय के कार्यालय में एक अधीक्षक एवं एक लिपिक कार्यरत हैं तथा चतुर्थ श्रेणी के चार मे से तीन पदों पर कर्मचारी कार्यरत हैं व एक पद रिक्त चल रहा है। चौकीदार तथा सफाई कर्मचारी का पद महाविद्यालय में सृजित नहीं हैं। छात्रावासों (कन्या/ छात्र) में भी चौकीदार एवं पाचक के पद सृजित नहीं हैं।

कार्यग्रहण, नियुक्तिया व स्थान्तरण :

स्थानातरण व कार्यग्रहण एक निरन्तर चलने बाली प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत कुछ लोग महाविद्यालय परिवार मे सम्मिलित होते है तथा कुछ स्थानांतरित होकर अन्य संस्थानों में अपनी सेवाए प्रदान करते है। इस शैक्षिणक सत्र मे महाविद्यालय परिवार मे निम्न सदस्य सम्मिलित हुए :

1. डॉ सुशील गौतम (सहायक आचार्य, ज्योतिष)
2. प्रो. रोहित (सहायक आचार्य, व्याकरण) नवनियुक्त
3. श्री. खुशहाल सिंह (अधीक्षक ग्रैड -।।)
4. श्रीमती प्रेमलता सेवादार)
5 . श्री भीम सिंह (सेवादार)

इस सत्र मे महाविद्यालय से निम्न सदस्यों का स्थानांतरण हुआ :

1. डॉ ज्ञानेश्वर शर्मा (सहायक आचर्य, ज्योतिष)
2. श्रीमती मीरा देवी (सेवादार)
3. श्री वंशी राम (पदौनत प्रयोगशाला सहायक)

केन्द्रीय छात्र संघ : हिमाचल प्रेदश विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार हर सत्र मे महाविद्यालय में अंक प्रतिशत वरीयता के आधार पर केन्द्रीय छात्र संघ के सदस्य चयनित किए जाते है। इस सत्र मे निम्न पदाधिकारी चयनित हुए :

1. अध्यक्ष – अंजू देवी (शास्त्री तृतीय वर्ष)
2. उपाध्यक्ष – धर्मेन्द्र कुमार (शास्त्री तृतीय वर्ष)
3. सचिव- निकिता (शास्त्री तृतीय वर्ष)
4. सह सचिव – प्रीति (शास्त्री प्रथम)

विद्यार्थियों की संख्या : वर्तमान मे महाविद्यालय मे कुल ८८३ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे है जिनमे से छात्र -२३९ व छात्राए -६४४ है। महाविद्यालय मे छात्र –छात्रा का कक्षा वार विवरण निम्न है :

	कुल छात्र	कुल छात्राएं	कुल छात्र-छात्राएं
प्राक-1	56	125	181
प्राक-2	22	60	82
शास्त्री-	199	252	351
शास्त्री-	233	129	162
शास्त्री-	329	78	107

वार्षिक-परीक्षा-परिणाम : किसी भी शिक्षण संस्थान की गुणवत्ता वहां के शैक्षिणक वातावरण व परीक्षा परिणामो पर निर्भर करती है। महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम हर वर्ष की भांति प्रशंसनीय रहा, गत सत्र में परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा :

क. प्राक् शास्त्री प्रथमवर्ष में कुल 181 परीक्षार्थीयों ने परीक्षा दी। महाविद्यालय स्तर पर कंवलजीत, श्रेया चौहान व ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

ख. प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष में कुल 82 परीक्षार्थीयों ने परीक्षा दी। महाविद्यालय स्तर पर प्रथम स्थान परीक्षित, द्वितीय स्थान मुस्कान व तृतीय स्थान नेहा का रहा।

ग. शास्त्री प्रथम वर्ष में कुल 351 विद्यार्थिओं ने परीक्षा दी, जिसमे प्रीति ने प्रथम, परीनीता दूसरे व मन्नत तीसरे स्थान पर रही।

घ. शास्त्री द्वितीय में कुल 162 परीक्षार्थीयों ने परीक्षा दी जिसमे से अधिकाधिक छात्र उत्तीर्ण हो चुके है एवं प्रथम स्थान ज्योति, द्वितीय स्थान शालिनी व पल्लवी तथा तृतीय स्थान पर मधुबाला रही।

ङ शास्त्री तृतीय वर्ष में कुल 107 परीक्षार्थीयों ने परीक्षा दी। प्रथम स्थान जन्नत का तथा द्वितीय स्थान सर्वेशवर का रहा तथा तृतीय स्थान यांचेंगातुक का रहा।

छात्रवृतियाँ :

- कर्नल भीम सिंह राघवा जी द्वारा शास्त्री परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त करने पर नेहा/कविता को सवर्ण पदक प्रदान किया गया।
- कन्द्रीय संस्कृत वि .वि.नव देहेली के द्वारा प्रदान की जाने वली छात्र वृति के लिए महाविद्यालय के ४६९ छात्रो का चयन हुआ जिसमे ३७५२००० रुपये छात्र वृति प्रदान की गई।
- स्वतंत्रता आश्रम बाड़ी बहोट सुंदरनगर के द्वारा महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं को छात्रवृति प्रदान की जाती है।
- कर्नल भीम सिंह राघव जी के द्वारा महाविद्यालय की छात्राओं बिमला, पल्लवी, स्वाति को अग्रिम शिक्षा के प्रोत्साहन राशि प्रतिमाह 1000 रु प्रदान की जाती है।

पुस्तकालय एवं पुस्तकालयाध्यक्ष : महाविद्यालय के पुस्तकालय में वेद-वेदाङ्गों, उपनिषदों, पुराणों, उपपुराणों, पुरातन एवं नवीन काव्य साहित्य एवं सौन्दर्य-शास्त्र, आयुर्वेद तथा अतिरिक्त भारतीय ज्ञान-विज्ञान की बहुमूल्य शास्त्ररूपी धरोहर महाविद्यालयीय छात्रों के उपयोग हेतु विद्यमान है। पुस्तकालय में इस समय सम्भवतः ११ हज़ार पुस्तकों का सङ्ग्रह उपलब्ध है।

सङ्गणक-प्रकोष्ठ : महाविद्यालय के पास आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित सङ्गणक-कक्ष भी उपलब्ध है। जिसमें १३ सङ्गणक अन्तर्जालीय (Internet) व्यवस्था एवं एक ओवर-हैडप्रोजैक्टर् सहित उपलब्ध हैं। जिनका उपयोग छात्रों एवं छात्राओं को सङ्गणक सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करने हेतु किया जाता है। ईसाब्द २०१३ से रूसा कार्यक्रम के प्रारम्भ होने के कारण छात्रों के पाठ्यक्रम में सङ्गणक का विषय भी निर्धारित है। यहाँ से महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ अपने विषय से सम्बन्धित व्यावहारिक एवं प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। अतः आधुनिकता के समय में महाविद्यालयीय छात्र इस सङ्गणक कक्ष से आधुनिक ज्ञान भी अर्जित कर रहे हैं।

अभिभावक शिक्षक संघ : महाविद्यालय में शिक्षक अभिभावक संघ का गठन किया गया है। वर्तमान मे अभिभावक शिक्षक संघ द्वारा अंग्रजी, राजनैतिक शास्त्र व व्याकरण तीनो विषय के एक-एक प्राध्यापक, एक लिपिक, एक पुस्तकालय सहायक, होस्टल संरक्षिका, रसोइया व रसोइया सहायक की नियुक्तिया की गई है। वर्तमान में अभिभावक शिक्षक संघ के पदों पर निम्न सदस्यों का चुनाव किया गया है।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ : हमारा महाविद्यालय सांस्कृतिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश में अपना एक विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण स्थान रखता है। सत्र 2022-23 में महाविद्यालय में इस सत्र में निम्न गतिविधियों व कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

क. महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 5 जून को पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधा रोपण किया गया।

ख. महाविद्यालय के छात्रों ने मार्च मास से लेकर 21 जून 2022 तक प्रतिदिन प्रातः 6 बजे से लेकर 7:30 बजे तक आयुषमन्त्रालय के साथ साँझा योगाभ्यास किया व 21 जून 2022 को अन्तर्राष्ट्रीय योगदिवस भव्य आयोजन किया गया।

ग. महाविद्यालय में सत्रारम्भ में नवागन्तुक विद्यार्थियों के लिए संस्कृत पठन पाठन व वाचन के अभ्यास हेतु दिनाँक 1 अगस्त2022 तक तीन संस्कृत सम्भाषण शिबिर का आयोजन किया गया।

घ. महाविद्यालय की NSS और ECO क्लब द्वारा 9 अगस्त 2022 को दाडू, जामुन, नींबू इत्यादि फलदार पौधों का रोपण किया गया।

ङ. महाविद्यालय के विद्यार्थियों SVEEP की टीम द्वारा 9 अगस्त 2022 को सामूहिक रूप से मतदान के लिए जागरुक किया गया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता SDM धर्मेश रामोत्रा जी ने की । महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 13 अगस्त 2022 तिरंगा यात्रा महाविद्यालय परिसर से पुराना बाजार होते हुए BBMB क्लोनी सुन्दरनगर से वापस महाविद्यलय परिसर तक आयोजित की।

च. महाविद्यालयों के छात्रों ने 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम में छात्रों भाग लिया।

छ. महाविद्यालय में हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा व 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर रंगोली, चित्रकला, निबन्ध लेखन, काव्य पाठ, कहानी लेखन तथा सम्भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

ज. 15 अक्तूबर को महाविद्यालय के सभा छात्रों ने जवाहर पार्क में SVEEP द्वारा आयोजित मतदाता जागरुकता अभ्यान में भाग लिया।

झ. मतदाता जागरुकता अभियान के अन्तर्गत 9 नवम्बर 2022 को सभी छात्रों ने मतदाता को जागरुक करने हेतु शपथ कर ली।

ञ. रेड रिबन क्लब के माध्यम से 10 नवम्बर को पोषाहार एवं स्वच्छता से सम्बन्धित विशेष जानकारी शिमला से ....N.G.O द्वारा दी गई।

ट. 7 दिसम्बर को महाविद्यालय में दन्त चिकित्सा विशेष शिबिर का आयोजन डेन्टल महाविद्यालय सुन्दर नगर द्वारा किया गया।

ठ. महाविद्यालय में 12-13 दिसम्बर को संस्कृत अकादमी द्वारा गीता जयन्ती के अवसर पर राज्यस्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया, व विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में अपनी भाग्यदारी सुनिश्चित की। इस कार्यक्रम संस्कृत आकादमी द्वारा सर्वाधिक अंक लेने वाले पाँच छात्रों 3600 प्रति विद्यार्थी पुरस्कृत किया गया।

ड. महाविद्यालय का शैक्षिक भ्रमण 25 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2022 तक वृन्दावन मथुरा आगरा जयपुर इत्यादि स्थानों का भ्रमण किया।

ढ. महाविद्यालय के शास्त्री प्रथम वर्ष के लगभग 82 विद्यार्थी एक दिवसीय भ्रमण पर देवीदढ़ गए।

ण. महाविद्यालय के छात्रों ने संस्कृत आकादमी द्वारा संस्कृतमहाविद्यालय ज्वालामुखी में आयोजित राज्य स्तरीय संस्कृत प्रतियोगिता में भाग लिया, व लघु प्रश्नोत्तरी में महाविद्यालय के दो छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

त. महाविद्यालय में अन्तः महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन 15 मार्च 2023 को किया गया जिसमें संस्कृत गीतिका, श्लोकोच्चारण, वेदमन्त्रोच्चारण, सूत्रान्ताक्षरी, लघु प्रश्नोत्तरी व लघु नाटिका संस्कृत भाषण, सद्योभाषण, अंग्रेजी व हिन्दी निबन्ध लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

थ. रोड़ सेफ्टी क्लब- रोड़ सेफ्टी क्लब की शुरुआत हि.प्र. सरकार के निर्देशानुसार इसी सत्र से की गई (2022-23)। इसके अर्न्तगत महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी व उनके पालन के लिए जागरुक किया। 18 मार्च 2023 को सड़क सुरक्षा जागरुकता अभियान के तहत ASI सुन्दर नगर ने छात्रों को सम्बोधित किया।

द. NSS महाविद्यालय में NSS की 50 छात्र छात्राओं की अर्ध ईकाई है। जिसमें प्रतिवर्ष 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया जाता है। NSS द्वारा वर्ष में एकदिवसीय 5 शिविर का आयोजन किया जाता है।

1. NSS द्वारा 9 अगस्त 2022 को फलदार 100 फलदार वृक्षों का रोपण "एक पेड़ मेरे कॉलेज के नाम" इस थिम के तहत किया गया।

2. NSS इकाई द्वारा 9 जुलाई को 108 पौधे रोपण हेतु भेंट किए गए।

3. 8 मई 2022 को NSS ईकाई द्वारा सामुदायिक भवन सुन्दरनगर में रक्तदान शिविर में भाग लिया गया

4. 24 सितम्बर, NSS दिवस पर महाविद्यालय की NSS ईकाई द्वारा स्वच्छता जागरूकता दिवस के रूप में मनाया गया।

खेलकूद : अध्ययन के साथ-साथ खेलकूद गतिविधियों का भी विद्यारथी जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है । इस सत्र में महाविद्यालय ने विभिन्न प्रतिस्पर्धाओ में भाग लिया –

1. राजकीय महाविद्यालय हरिपुर मनाली में 28-30 अक्तूबर 2022 तक INTER COLLEGE (M/W) X- COUNTRY CHAMPIONSHIP 2022 में भाग लिया।

2. राजकीय महाविद्यालय संजौली (शिमला) में बालीबाल (महिला) CHAMPIONSHIP 2022 28-30 अक्तूबर 2022 तक महाविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।

3. राजकीय महाविद्यालय सीमा (रोहडू) शिमला में कबड्डी (पुरुष) 2022 1-4 नवम्बर तक भाग लिया।

गायत्री कालेज आफ एजुकेशन कांगू में CHAMPIONSHIP 2022, 21-22 दिसम्बर 2022 तक महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया जिसमें प्रदेश स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स्काऊटिङ्सम्बन्धित गतिविधियाँ : हमारे महाविद्यालय की 'भारत स्काऊट्स एण्ड गाइड्स' संस्था की इकाई का समूचे हिमाचल प्रदेश में अपना एक विशिष्ट स्थान है। हमारे महाविद्यालय के रोवर्ज़ एवं रेञ्जर्ज़ संस्था के कार्यों में निरन्तर रूप से संल्लग्न रह कर कड़ी मेहनत और निष्ठा के साथ, महाविद्यालयीय और सामाजिक, अनेक प्रकार के कार्यों का सम्पादन करके अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन किया करते हैं। स्काऊटिङ्-कार्यों में कुछ विशेष वृद्धि हुई है। इसके लिए महाविद्यालय के रोवर्ज़ एवं रेञ्जर्ज़ प्रशंसा के पात्र हैं। महाविद्यालय प्रशासन इनसे भविष्य में भी इसी प्रकार और अधिक निपुणता एवं सहजता के साथ अपने दायित्वो की पूर्ति करके संस्था एवं अपने अभिभावकों के नाम को उत्तरोत्तर उज्जवलित करने हेतु आशा करता है।

छात्रावास-सम्बन्धित गतिविधियाँ : सरकार की अनुकम्पा से जनजातीय छात्रावास योजना के अन्तर्गत जनजातीय छात्राओं के लिए छात्रावास का सुचारु रूप से प्रारम्भ अगस्त २०१४ से किया जा चुका है । जिसमें ५६ छात्रओं के आवास की व्यवस्था उपलब्ध है। वर्तमान में छात्रावास में कुल ५५ छात्राएँ निवास कर रही हैं।

CCTV CEMARA : महाविद्यालय परिसर में परीक्षाओं के समुचित सञ्चालन हेतु आवश्यकतानुसार परीक्षा-कक्ष एवं कक्षा कक्ष में १६ CCTV CEMARA लगाये गये हैं।

ACADEMIC TOPPERS

Prak Shastri Ist Year

Parikshit
Roll No. 41710
Ist Position, 240/400

Muskan
Roll No. 41674
2nd Position, 236/400

Prak Shastri 2nd Year

Namrta Uppal
Roll No. 41197
Ist Position, 318/400

Preeti
Roll No. 41162
2nd Position, 300/400

Shastri Ist Year

Nikita
Roll No. 4211220103
Ist Position, 805/1100

Anchal
Roll No. 4211220012
2nd Position, 739/1100

Minakshi Sharma
Roll No. 2021025
2nd Position, 739/1100

Shastri 2nd Year

Anju Devi
Roll No. 4201220014
Ist Position, 695/1100

Dharmender Sharma
Roll No. 4201220033
2nd Position, 693/1100

Shastri 3rd Year

Danesh Kumar
Roll No. 4191220020
Ist Position, 782/1100

Leena
Roll No. 4191220052
2nd Position, 781/1100

सम्पादयकीयम्

आत्मविश्वाससम्पन्नो मानवोऽधियाति साफल्यम्। अवश्यमेवाहं सफलता-श्रियमवाप्स्यामीत्येतस्य दृढविश्वासस्यावस्थितिर्मनस् यपेक्ष्यतेऽनिशम्। स एव सुकृती एवंविधं दृढीयांसं विश्वासं मनसि प्रतिष्ठापयितुं प्रभवति यः सत्यं शुश्रूषते सततम् । यत्र जगदध्यात्मभावयोः सामञ्जस्यं परिपूर्णं जायते तत्रैव परिभाषापि सत्यस्य भवति पूर्णा। सत्यञ्चेदं यदस्मज्जीवनयात्रायाः भवत्यवलम्बस्तदैव वयं जगतस्तत्प्रेरकशक्तेश्च परिचयमवाप्य कृतार्थीभवामः। अतएव सत्यमेव जीवनस्य सर्वस्वम्। 'सत्यमस्मदीयजीवनस्य नियमः'। न सत्यात् परं किमपि। सत्यं स्वयं परमेश्वरस्याभिव्यक्तिरस्ति। कश्चिच्छास्त्रकारश्चेदमेव प्रतिपादयन् ब्रूते-

"सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥"

जीवनयात्रैव का जगतो घटनाश्च सर्वाः जीवनं नाप्यायन्ति न तास्तत्रोत्साहं न च स्फूर्तिमयीं प्रेरणां सञ्चारयन्ति। कियत्कालं यावत् ता मन इन्द्रियाणि चावर्जयन्ति परं क्षिप्रमेव तत्र घृणोत्पद्यते ततश्च स्वभाववशात् पदार्थान्तरे जीवनरसमन्वेष्टमुपस्त्रियते परं कालान्तरेण ततोऽपि चित्तं निवर्तते । तात्पर्यमिदमेव यत् पदार्थात् पदार्थान्तरं वस्तुतो वस्त्वन्तरं, घटनातो घटनान्तरं धावति मनः परं न कुतोऽपि चेतना स्फूर्तिमधिगच्छति ।

भौतिकतापरकदृष्टित्वात् न सूर्यस्योदये, न नद्याः कलकलशब्दे, न वयसां विरावे, नानोकहानां पुष्पिततायां फलिततायाञ्च वयं कामपि प्रेरणां लब्धुं पारयामः। तस्मान्न चेतना तृप्यति न सा प्रसीदति। वस्तुतस्तु असत्यस्य च्छायायां च सुखं क्व च शान्तिः। असत्यत्वात् तेषां सर्वेषां पदार्थानां तेऽस्मान् क्लिश्नन्त्येव पीडयन्त्येव च।

कीदृशमपि कर्म लघु-गुरु कृतं स्यात् तत्कृते उद्योगस्यापेक्षा भवति। पारमार्थिकं कर्म तु परमकठिनमस्ति तन्नितान्तमेव गुरु भवति। तत्तु परमकठोरमुद्योगमपेक्षते । ये जनाः कठोरात् परिश्रमाद् बिभ्यति, ये विघ्न-बाधानां पुरो नतभालाः सञ्जायन्ते न मनसि दृढ सङ्कल्पं धारयन्ति ते न कदापि सफलमनोरथाः भवन्ति। दृढसङ्कल्पविहीनत्वात् ते मध्य एव कर्म मुञ्चन्ति ।

भगीरथो नाम राजा प्रियपरमार्थी दृढसङ्कल्पवान् सत्यनिष्ठो महीप आसीत्। पुराणानि ज्ञापयन्ति यद् भगीरथस्य पूर्वजाः शापेन अदह्यन्त। मरणान्तरमपि ते न सद्गतिमवापुः। तेषामुद्धारार्थमेष उपायो निर्दिष्टोऽभवद् यच्चेद् गङ्गा पृथिवीमागच्छेत् सा च तस्मिन् स्थाने प्रवहेत् यत्र ते शापेन दग्धा अजायन्त तदा तत्पूर्वजाः पितरः सद्गतिमवाप्तुं पारयेयुर्नान्यथा।

दुर्बलहृदयाः पुरुषा विचारयन्ति बहुतरं परमाचरन्ति न किमपि। तेषां प्रकृतिरेवेदृशी भवति परं मनस्विनो मानवा यदुचितं युक्तञ्चावगच्छन्ति तदनुसर्तुं भवन्ति सोत्साहं सन्नद्धाः साहसस्याग्रे वराक्यो बाधाः कियत्कालं स्थातुं शक्नुवन्ति ? ताः विवशाः भूत्वा मार्गं त्यजन्ति। गमनार्थं गमनकारिणम्प्रति तत्क्षणमवसरं प्रयच्छन्ति। भगीरथो यदा स्वर्गाद् गङ्गायाः पृथिव्यामवतारणमुद्दिश्य स्वकीयं ध्रुवं निश्चयं स्वजनान् प्रति अश्रावयत् तदा ते निःस्तब्धतामगुः। एतावन्महद् गुरुकार्यमीदृशो लघुयुवा कर्तुं शक्नुयादित्यत्र न ते श्रद्दधति स्म। आदौ सर्वेऽप्येकस्वरेण स्वसम्मतिं न प्रादीदृशन्। मार्गे ह्यागमिष्यमाणान् प्रत्यूहान् बोधयन्तस्ते तं निरुत्साहं कर्तुमारेभिरे। परं यथा चिराद् दृश्यते तथैवात्रापि दृष्टमभूत्। दृढनिश्चयस्य पुरतः सर्वे नतमस्तकाः भवन्ति। गङ्गावतारणनिमित्तेन स चिरं भूरि शतं वर्षाणि कठोरं तपश्चकार तपोवन सम्बन्धीनि सर्वाण्यपि कष्टानि च सेहे। शापप्रपीडिताः पूर्वजाः सद्गतिं लब्धवन्तः सः स्वयं स्पृहणीयममरं यशः प्राप्तवान्।

जीवनं हि एवंविधानामेव जनानां धन्यं येषां पुरुषार्थेन सम्पूर्णोऽपि संसारः उपकृतो भवति । वासना तृष्णा कर्दमे चतुरस्त्रं वेल्लतां कृमि-कीटानां जीवनं नयतां पुंसां जीवनेनास्त्येव को लाभः ? महामनस्विनि भगीरथे को गुण एतादृगासीत् येन स तद्विधेऽपि महनीये दुस्साध्ये कार्ये साफल्यमियाय ? आसीत् स गुण आत्मविश्वास एव।

स जनः केन प्रकारेण विद्यां लब्धुं पारयेत् यन्मानसं निराशा-तमसाच्छन्नमास्ते। "अहं विद्वान् भवितुमिच्छामि परं किं करवाणि अस्म्यहं निस्सहायः। न मम सकाशे साधनानि सन्ति न मम सविधे धनमेव पर्याप्तम्। एवंविधाननुकूलपरिस्थितिवशादस्म्यहं विवशः परवश्च। अत एव विद्याप्राप्तिद्वारं मे विद्यते आवृतम्" – इत्येवं विधा

विचारा न कदापि हितावहा आत्मविश्वासाभावात्। आत्मविश्वासः सर्वविधा अपि विपदो व्याहन्तुं भवति तमः।

असौ नवयुवा केन प्रकारेण धनवान् भवितुमर्हति यो हि 'अहं पौरुषमाश्रित्य धनमुपार्जयितुं प्रभविष्णुः' इत्येतादृशं विश्वासं न निदधाति । धनं तु बिरला एव प्राप्नुवन्ति तत्सुखोपभोगविषयकं भाग्यं न सर्वे लभन्ते इत्येतादृश- विचारकारिणो जनाः वस्तुतः सन्ति श्रमभीरवः ।

अहमध्ययने सफलतामधिगमिष्याम्याहोस्विन्न' – इत्येतादृशं विचारं निधाय यो जनो अध्ययने प्रवेशाभिलाषी भवति तस्मात् सन्दिग्धहृदयात्कापि नास्त्याशा। कोऽपि मानवस्तावत् स्वकार्ये सफलतां नाधिगन्तुं योग्यो भवति यावत् सः सफलतायां दृढं विश्वासं न निदधाति। मानवस्तदेव कार्यसम्यक् युक्ततया कर्तुं शक्नोति तत्रैव सः सफलतां लब्धुं पारयति यत् सिद्धौ तस्य हार्दिको भवति विश्वासः।

एवं विधा अनेके नवतरुणाः ज्ञाताः सन्ति ये स्वकीयव्यवसायनिश्चयने परमोत्साहं दृढ निश्चयं सङ्कल्पञ्च परिगृहीतवन्तस्तस्मान्न कोऽपि तान् तदुद्देश्यात् स्रंसयितुमशकत्। अन्ततो गत्वा ते स्वकार्ये प्राप्तवन्तश्चाशातीतां सफलताम्।

नास्मदीयमुद्देश्यमस्मत्तः पृथग् इति ये पूर्णविश्वासेन सार्धं प्रागेवोररीकृतवन्तस्तान् को नाम जनस्तदुद्देश्यपथाद् भ्रंशयितुमर्हति? तेषां सङ्कल्पस्तदीय-व्यक्तित्वस्यैवाभिन्नमङ्गं जायते। चेद् वयम् अविचलपौरूषोत्साहसाहससम्पादितानि तदीयानि गुरुगुरुतराणि कार्याणि तत्तत्कार्यकर्तृश्चेक्षेमहि तेषु च गाहेमहि तदा तत्र मूले दृढात्मविश्वासमेव प्रामुख्येन संलभेमहि। स मानवोऽवश्यमेव साफल्यं यास्यति पुर उपसृतो भविष्यति, उत्थानञ्च गमिष्यति यो नैजकार्यसम्पादनशक्तौ हढं विश्वासं निदधाति। एवंविधस्य विश्वासस्य इष्टं मानसिकं फलं तेषामेव जनेषु न पतति ये दृढविश्वासपूर्वककार्यानुष्ठाने रता भवन्ति अपि तु तेष्वपि जनेषु तस्य प्रभावो निपतति ये दृढविश्वासपूर्वककार्याचरणशीलानां सान्निध्ये निवसन्ति।

यावदेव वयं स्वयोग्यतायां कार्यक्षमतायाञ्च विश्वासं निधास्यामस्तावदेवास्मज्जीवनमपि सफलं भविष्यति यावच्च वयं स्वयोग्यतायामविश्वासं करिष्यामस्तावदेव वयं विजयात्साफल्यात् दूरे स्थास्यामः । भवतु नामास्मदीयो मार्गः कामं कण्टकाकीर्णः सङ्कटाकुलोऽन्धकारपूर्णश्चास्मत्कर्त्तव्यमिदमेव यत्कदापि न स्वीयं तिलाञ्जलिं समर्पयामः स्वकीयमात्मविश्वासम्प्रति। अस्मत्कार्यंसाफल्यमस्मदात्मविश्वासमेवाधितिष्ठति। 'तत् कार्यनियतत्वेन कर्तुं शक्नुमो वयमित्येतस्मिन् विचारे महत्यद्तशक्तिः सन्निहितास्ति । संसारे ये केऽपि महामानवाः संजातास्तेषूच्चकोटिमाटीकमान आत्मविश्वासो दृष्टोऽभवत्।

जगति यावन्तो महान्तः आविष्काराः जाता जातानि च विचित्रविचित्रतराणि कार्याणि तावन्त आविष्कारास्तावन्ति चाद्तानि कार्याणि सर्वाणि दृढविश्वासस्य दृढनिष्ठाया अदम्यकार्यशीलताया एव सत्फलानि वेद्यानि। अपि भवन्तो जानन्ति ते आविष्कर्तारः कीदृशीः कीदृशीः कठिनताः बाधाश्च सेहिरे ? किं भवन्तो विदन्ति यत् चिरं ते सफलता-चिह्नमपि न विलोकयितुमशक्नुवन्। बहूनि वर्षाणि हि तेषामन्धकारमयान्येवातिक्रान्तान्यभूवन् परं न ते लक्ष्याद् विमुखा अजायन्त। न ते आत्मविश्वासे मनागपि अप्रीतिमदीदृशन्। अन्ततस्ते ज्योतिरपश्यन्; सफलाः अभूवन्।

आत्मविश्वासपरित्यागं विधाय सफलताधिकारिणो भवितुं क्षमा आसन्; कि ते नैजाद्ताविष्कारैः संसारमाश्चयितं विधातुं योग्या आसन् ? प्रतिकार्यं तदैव सफलं जायते यदा तत्र दृढविश्वासस्य बलं सञ्चरते। उदाहरणत्वेन- दृढविश्वासस्य अभावेन 16 वर्षाणि यावद् महाविद्यालयस्य पत्रिकेयं नैव प्रकाशिता। दृढ आत्मविश्वास एव तं पन्थानं दर्शयति योऽस्मान् निर्दिष्टस्थानं नयति। कार्यस्य हि बलमस्त्यात्मविश्वासः। ततोऽस्मासु शक्तेरेतादृशं स्रोतः स्फुटति यत् कठिनतममपि कार्यं विनायासं पूर्तिं प्रापयति । उक्तमपि-

क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।

अस्माकं प्रमुखं कर्त्तव्यमत इदं यदात्मविश्वासमात्मन्युत्पादयितुं तं दिनानुदिनं वर्धयितुं नितरामेकाग्रचित्ता भूत्वा प्रयतेमहि । तत्रैव मानवमात्रस्य शिवं मङ्गलञ्च सन्निहितमिति दिक्।

।। भवतु तावच्छुभमङ्गलम्।।

डॉ. तिलकराजः
(दर्शनविभागः)
रा.सं.महाविद्यालयः
सुन्दरनगरम्

केंद्रीय छात्र परिषद

अध्यक्ष

अंजू देवी
शास्त्री तृतीय वर्ष

उपाध्यक्ष

धर्मेन्द्र कुमार
शास्त्री तृतीय वर्ष

सचिव

निकिता
शास्त्री द्वितीय वर्ष

सह सचिव

प्रित्ती
शास्त्री प्रथम वर्ष

EDITORIAL BOARD
सम्पादकमण्डलम्

संरक्षकः (Patron)

डॉ. खुशवन्तसिंहः
Dr Khuswant Singh
Principal

मुख्यसम्पादकः (Chief editor)

डॉ. तिलक राजः

संस्कृतविभागस्य सम्पादकः (Editor of Sanskrit Dept.)

डॉ. सुशील गौतमः

आ. रोहित शर्मा

हिन्दीविभागस्य सम्पादकः (Editor of Hindi Dept.)

प्रो. वन्दना कुमारी

आंङ्लविभागस्य सम्पादकः (Editor of English Dept.)

प्रो. ममता शर्मा

पहाड़ीविभागस्य सम्पादकः (Editor of Pahari Dept.)

आ. अक्षय कुमारः

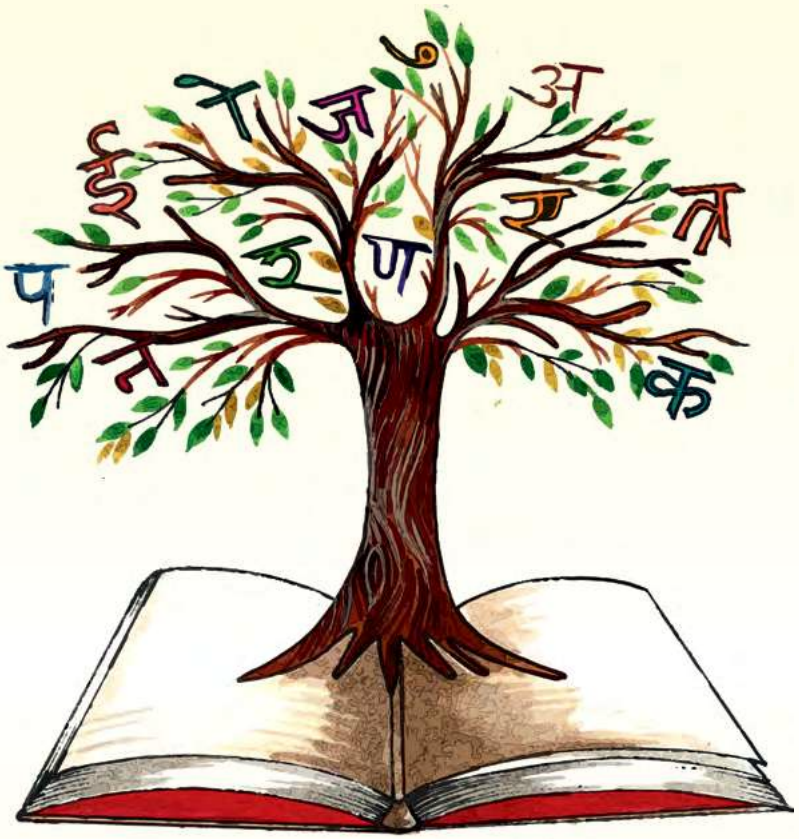

संस्कृतम्

संस्कृतविभागस्य सम्पादकः
Editor of Sanskrit Department
डॉ. गौतमः सुशील , आ. रोहित शर्मा

पाणिनिव्याकरणस्य पहाड़ीभाषायां प्रभाव: हिमाचलप्रदेशे संस्कृतस्य स्थितिश्च

"नमः नागेश्वरमिष्टं कुलवृद्धिविवर्द्धनम्।
सर्वसंकटविनाशाय नागेश्वराय नमो नमः।।"

संस्कृतभाषा न केवलं भारतस्य अपितु सर्वस्यापि विश्वस्य प्राचीनतमासु भाषासु एका भाषा अस्ति। अस्या: भाषाया: 'देववाणी' 'गीर्वाणवाणी' इत्यादीनि नामानि सन्ति। अस्माकं ये प्राचीना: ग्रन्था: सन्ति ते सर्वे ग्रथा: संस्कृतभाषायामेव लिखिता: सन्ति। उक्तमपि–"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वेसंस्कृतं संस्कृतिस्तथा" अस्माकं भारतदेशस्य प्रतिष्ठे द्वे वर्तेते। अर्थात् संस्कृतेर्मूलं संस्कृतभाषा वर्तते। संस्कृतभाषायामेव भारतस्य सांस्कृतिक विचार: उच्चादर्श: नैतिकमूल्याश्च समाहिता: वर्तन्ते। यथा वाल्मीकिकृदादिकाव्येरामायणे भगवान् राम: लक्ष्मणं प्रति उपदिशति-

"अपि स्वर्णमयी लङ्का न मेरोचते लक्ष्मण।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।"

एवं अस्माकं भारतदेशस्य संस्कारयुक्त संस्कृतिरस्ति। भारतदेशेऽपि हिमाचलप्रदेशे संस्कृतस्य का स्थिति: वर्तते अस्मिन् विषये अहं स्वलेखेन दृष्टि: निपतिष्यामि।

हिमाचल प्रदेशस्य स्वरूपम्–हिमाचल शब्द: 'हिम+अचल' इति संयोगात् "अक: सवर्णे दीर्घ:' इति सूत्रेण सवर्ण दीर्घे कृते हिमाचल शब्द: निष्पद्यते। हिमशब्दस्यार्थ:=हिमपात: (बर्फ), अचलशब्दस्यार्थ:= पर्वतविशेष:। प्रदेशशब्द: प्रान्तस्य बोधक: वर्तते एवं हिमाचल प्रदेशस्य व्युत्पत्तिलभ्योऽर्थ:। प्रशासनिकदृष्ट्या हिमाचलप्रदेशस्याविर्भाव: १५ अप्रैल १९४८ तमेवर्षेभारतीयसंघस्य केन्द्र शासित राज्यरूपेण अभवत् । तस्मिन् काले राज्यस्यास्य 'महासू , सिरमौर, मण्डी, तथा च चम्बा इत्यादि चत्वारि मण्डलानि आसन्। कालान्तरे २५ जनवरी १९७१ तमेवर्षे हिमाचलस्य पूर्ण राज्यत्व प्राप्तिर्भवत्। सम्प्रति हिमाचल प्रदेशे 'कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना, बिलासपुर, चम्बा, मण्डी, कुल्लू, शिमला, सोलन, सिरमौर, लाहौल स्पीति, किन्नौर" एतानि द्वादशमण्डलानि सन्ति।

मत्स्यपुराणे हिमाचलस्य 'हिमालय' इति शब्दरूप: प्रयोगो वा दृश्यते। संस्कृत महाकाव्येष्वपि हिमालय शब्दस्य प्रयोग: प्राप्यते। यथा महाकवि कुलगुरू कालिदास: कुमारसम्भवस्य महाकाव्यस्य प्रथमसर्गे वदति-

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयोनाम नगाधिराज:।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थित: पृथिव्यां इव मानदण्ड: ।।"

अस्माकं प्राचीन धार्मिक शास्त्रेषु यदा पश्यामश्चेत् तदा श्रीमद्भगवद्गीतायां स्वयं भगवान् श्री कृष्ण: हिमालयस्य कृते आत्मस्वरूपमेव उद्घोषयन्ती। यथा-

"महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालय: ।।"

हिमालये हिमाचलस्य भगौलिकस्वरूपस्य स्कन्दपुराणस्य मानसखण्डे स्पष्टं कृतं यथा-

"खण्ड: पञ्च हिमालयस्य कथिता नेपाल कूर्माञ्चलौ ।
केदारोऽथ जालन्धरोऽथरूचिर काश्मीरसंज्ञोऽन्तिम: ।।"

देवसंस्कृतौ पहाड़ी भाषायां च संस्कृतस्य प्रभाव :

हिमाचलस्य कृते देवभूमिरपि कथ्यते यतोहि अत्र देवानां स्थानं वर्तन्ते । यत्र देवानां स्थानं भवति तत्र संस्कृतस्योत्थानं स्वयंसिद्ध:। यतोहि देवानां भाषा संस्कृतमेव भवति। तेषां पूजामर्चनां च संस्कृत भाषायामेव भवति। हिमाचल प्रदेशस्य प्रत्येक ग्रामे नगरे वा कस्मिन्नपि देवस्य देवालयं वर्तते। तत्र सर्वेषु देवालयेषु तत्रस्थ लोकाचार दृष्ट्या सर्वविधं विधानं भवति। अस्माकं शिमला जनपदस्य ये ऊपरि पहाड़ी क्षेत्रे तत्रस्थ देवानां मन्दिराणि सन्ति तत्र सर्वविधं देवकार्यं पूजामर्चनां च तत्रस्थ लोकाचार शाबरवेदे तथा संस्कृत भाषायामेव भवति। यदा भाषागत दृष्ट्या पश्याम: तदोच्यतेव सर्वेषां भाषाणां जननी संस्कृतम्। हिमाचल प्रदेशे पहाड़ी भाषाया: प्रचलनं वर्तते। सर्वेषु ग्रामेषु नगरेषु वा भाषाया: काश्चन् परिवर्तनं दरीदृश्यते। मूलरूपेण पहाड़ी

भाषायाम् संस्कृतस्य स्वरूपं सुस्पष्टमेव दृश्यते। यथा शिमला जनपदस्य जुब्बल मध्ये मम झड़ग ग्रामस्य क्षेत्रीय भाषाया: केचन शब्दा: व्याकरण दृष्ट्या अव्ययाश्च मया उपस्थाप्यन्ते तद्यथा – पाणिनीयसंस्कृत शब्दा: पहाड़ी भाषायां परिवर्तितं रूपम्

तदा	तैबै
कदा	केबी
मम	मुखै
अहम्	आअं
कुत्र	कीहा
आगच्छ	आजा
ऊपरि	ऊबा
अध:	उटा
अस्ति	अस्ति

एवं एतेषां पाणिनीयशब्दानां परिवर्तितं रूपं संस्कृतमेव। एवमेव हिमाचल प्रदेशस्य पहाड़ी भाषायां संस्कृतभाषाया: प्रभाव: सुस्पष्टमेव प्रतिभाति। अस्माकं हिमाचल प्रदेशे ये देवालया: सन्ति तेऽपि वास्तुशास्त्रदृष्ट्यैव निर्मीयते। यथा शिमलायां सुप्रसिद्ध हाटेश्वरी देव्या: मन्दिरं वास्तुशास्त्र दृष्ट्या एव निर्मितम्। एवमेव अस्माकं हिमाचल प्रदेशस्य देवसंस्कृतौ अपि संस्कृतस्य स्वरूपं दृश्यते।

हिमाचल प्रदेशे संस्कृतस्य साम्प्रतिकी स्थिति :

यदा हिमाचलप्रदेशस्य संस्कृतस्य स्थिति: पश्याम: तदा वक्तुं शक्यते यत् हिमाचल प्रदेशे संस्कृतस्य स्थिति: संतोषजनकी वर्तते। हिमाचल प्रदेशे तु इदानीं संस्कृतयुग प्रचलति। हिमाचल प्रदेशस्य संस्कृत द्वितीया राजभाषा उद्घोषिता। १६ फरवरी २०१९ तमे वर्षे हिमाचल प्रदेशस्य विधानसभायां राज्यस्य संस्कृत द्वितीया अधिकारिकभाषारूपेण विधेयक: संस्तुत:। तस्मिन् समये राज्यस्य सिंचाई सार्वजनिक स्वास्थ्यमन्त्रिणा चश्रीमहेन्द्र सिंह ठाकुर महोदयेन हिमाचल प्रदेशस्य आधिकारिकभाषारूपेण विधेयक: प्रस्तुतम् । अनु. ३४३, ३४५, ३४६, ३४७,अनुसारं राज्यस्य द्वितीया राजभाषा घोषिता।

सर्वप्रथमं २०१० तमे वर्षे उत्तराखण्डसर्वकारेण संस्कृतस्य द्वितीया राजभाषा उद्घोषिता तदनन्तरं हिमाचल प्रदेश: द्वितीय: राज्य: वर्तते येन संस्कृतं द्वितीया राजभाषा घोषिता। इदानीमपि हिमाचल प्रदेशे बहूनि शास्त्री पदानि पूरितानि तथा च शास्त्री पदं ४९३ पदानि प्रक्रियाधीनानि वर्तन्ते। हिमाचलप्रदेशे अष्टौ राज्य सर्वकारस्य संस्कृत महाविद्यालया: सन्ति। एवं हिमाचलप्रदेशे संस्कृतस्य संरक्षणाय बहव: संस्थान्यपि वर्तन्ते। संस्कृतभाषाया: संरक्षणाय हिमाचल प्रदेशे हिमाचल संस्कृत अकादमी तथा हिमाचल संस्कृतभारती एतयो: महदवदानं वर्तते। एतै: संस्थाभि: समये-समये संस्कृत संरक्षणाय कार्यक्रमाणि सङ्गोष्ठ्या: प्रतियोगिताया: शास्त्रीय स्पर्धायाश्च आयोजनं क्रियन्ते। संस्कृतभारती द्वारा प्रत्येकजनमुखे संस्कृतनिर्माणकार्यं सततं प्रयतत्ते। कोरोना कालेऽपिऑनलाइनमाध्यमेन संस्कृतभारती तथा च हिमाचल संस्कृत अकादमी द्वारा विभिन्न गतिविधय: शास्त्र परिचयवर्गश्च आयोज्यते स्म।

निष्कर्ष : एवं अस्माकं हिमाचल प्रदेशे देवभूमौ संस्कृतस्य प्रचार: प्रसारश्च एवमेव अग्रे सरेत् तथा चास्माकं देश: प्रदेशश्च संस्कृत विश्वगुरू: इति पुन: स्थापनं स्यात्। अत: अस्माभि: इतोऽपि संस्कृतमातु: कृते प्रयत्न: करणीय:।

"संस्कृतस्य कृते जीवन् संस्कृतस्य कृते यजन् ।
आत्मानमाहुतं मन्ये वन्दे संस्कृत मातरम्।।"

जयतु संस्कृतम्, जयतु भारतम्

रोहित कुमार:
सहायकाचार्य:
(व्याकरण विभाग:)

व्याकरणशास्त्रस्य महत्वम्

"यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठपुत्र व्याकरणम्
स्वजन: श्वजनो माभूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्"

सम्पूर्णविश्वस्य प्राचीनतमाभाषा संस्कृतभाषा वर्तते। सर्वे बुद्धिजना: संस्कृतभाषाया: व्याकरणं अन्य व्याकरणात् सुदृढं मन्यन्ते। "व्याकरण" इति शब्दस्य व्युत्पत्ति: वि आङ् उपसर्गाभ्यां कृ धातो: ल्युट् प्रत्यये कृते भवति। व्याकरणं किं भवति ? व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: अनेन इति व्याकरणम्" अर्थात् येन शास्त्रेण शब्दानां व्याक्रिति व्युत्पत्ति च भवति तत् व्याकरणम् । अन्यायामपि भाषाया: शब्दानां च शुद्ध-अशुद्धं ज्ञानं येन शास्त्रेण भवति, तत् व्याकरणम्। अत: प्राचीन कालात् शास्त्रेषु वेदेषु च व्याकरणस्य प्रमुखं स्थानं वर्तते। उक्तमप्यस्ति-"मुखं व्याकरणं स्मृतम्"अर्थात् वेदरूपी पुरुषस्य मुखं व्याकरणमस्ति। वेदानां सम्यक् अध्ययनार्थे, अर्थबोधाय तथा वेद मन्त्राणां व्याख्याया: कृते वेदाङ्गस्य ज्ञानमनिवार्यं वर्तते। षड् वेदाङ्गानि सन्ति–

"शिक्षा व्याकरणं छन्द: निरुक्तं ज्योतिषं तथा
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिण:"

शिक्षा, व्याकरणम्, छन्द, निरुक्तं, ज्योतिषम्, कल्पश्च षड् वेदाङ्गानि। "ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्म: षड्ङ्गोवेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च"महाकवि दण्डीरपि व्याकरण विषयोपरि लिखितमस्ति :

"इदमन्धन्तम: कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् ।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ।।"

भाषां विना लोका: नैजमाशयं प्रकाशयितुं न प्रभवयेयु:। आशयं चाप्रकाश-यन्तस्ते किमपि कर्तुं कथं समर्था: भवेयु:। तदभावे तेषां कृते जगदिदमन्धकारमयं स्यात्। साधुशब्दाः हि प्रयुक्ता: यथार्थमर्थं प्रकटयन्ति। साधुशब्दप्रयोगे व्याकरणमेव मूलभूतं कारणम्। रामायणेऽप्युक्तम् :

"नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किञ्चिदपभाषितम् ।।"

अवैयाकरण: साधुशब्दप्रयोगे नैव क्षम:। व्याकरणज्ञानं विना सम्यक् पदपदार्थावबोध: नैव सम्भव:।

"प्रधानं च षड्स्वङ्गेषु व्याकरणम्"

अर्थात् षड्स्वङ्गेषु व्याकरणं मुख्यं वर्तते। व्याकरणशास्त्रस्य आदि प्रवक्ता भगवान् ब्रह्मा वर्तते। "ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्य:, ऋषयो ब्राह्मणेभ्य:।"

कति व्याकरणानि ? लघु त्रिमुनि कल्पतरूकार: कथयति–

"ऐन्द्रं चान्द्रं काशकृत्स्नं कौमारं शाकटायनम्।
सारस्वतं चापिशलं शाकलं पाणिनीयकम्।।"

मुख्यानि नव व्याकरणग्रन्थानि सन्ति। अद्यत्वे लौकिक संस्कृतस्य मूलं व्याकरणं "पाणिनि अष्टाध्यायी" न ति भारतवर्षे अपितु सम्पूर्ण विश्वे प्रसिद्धं वर्तते। महर्षि पाणिनिना प्राय: ४000 सूत्राणि विरचितानि। सूत्रस्य लक्षणम् :

"अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदु: ।।"

वैयाकरणा: एतादृशा: लघुता स्वीकुर्वन्ति यथा एकां परिभाषायाम् कथयन्ति :

"अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणा:"

आचार्य पतञ्जलि: व्याकरणप्रयोजनमुद्घोषयन्नाह

"रक्षोहागमलघ्वसन्देहा: प्रयोजनम् ।"

व्याकरणमहाभाष्यं महर्षि पतञ्जलिना प्रणीतम् तर्हि भाष्यस्य लक्षणं एवं वर्तते :

"सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदं सूत्रानुसारिभि:।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्य विदो विदु:।।"

भाष्यं नाम तस्य भवति यत् सूत्राणामर्थानां विवेचनं व्याख्यानं च करोति। व्याकरणक्षेत्रे श्रीलक्ष्मीधरतनुजस्य भट्टोजिदीक्षितस्य नाम स्वर्णाक्षरैरङ्कितं भविष्यति। तेन विदुषा शब्दकौस्तुभ: तन्निष्कर्षरूपा वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी तद्व्याख्यानभूता मनोरमा चेति सन्दर्भा: विरचिता:।

"येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्।
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नम: ।।"

परीक्षित शर्मा
शास्त्री प्रथम वर्ष

मानवजीवनस्य वास्तविकता

सम्प्रति सर्वे मानवा: विविधेभ्य: मानसिकव्याधिभ्य: पीडिता: सन्ति:। संसारेऽस्मिन् प्रत्येक: मानव: प्रत्येकं कार्यं केनचिद् प्रयोजनवशादेव करोति। कार्यात् पूर्वमेव मनसि विचार: उदेति यत् अस्य कार्यस्य को लाभ: भविष्यति ?

पूर्वोक्तसंस्मरणेन मनुष्य: नानाविधचिन्तायुक्तेन स्वविवेकस्य ह्रास: करोति ? स: अनेकेषु प्रश्नेषु प्रवृत्तो भवति येषामुत्तराणि प्राप्तुं स: असमर्थो भवति, तर्हि कथमेतेषामुत्तरं प्राप्तुं शक्नुम: ?

अस्योत्तरमस्ति यत् अस्माकं संस्कृतशास्त्रस्य प्रत्येक: ग्रन्थ: विशिष्टा भूमिका निर्वहति। श्रीमद्भगवद्गीताया: मानवजीवनस्य सर्वेषां प्रश्नानामुत्तरं मन्यते। महाभारतयुद्धे यदा मोहयुक्तेन अर्जुनेन युद्धं न करणस्य निर्णय: कृत: तदा भगवान् श्रीकृष्णेन गीताया: उपदेशं कृत्वा सर्वेषां प्रश्नानामुत्तरं दत्वा अर्जुनस्य मोहस्य नाश: कृत:।

गीतायां प्रस्तावितं –

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्तव कर्मणि।।"

अर्थात् – कार्ये एव भवत: अधिकार: अस्ति, न तु कार्यस्य परिणामे, अत: फलस्य कृते कार्यं मा कुरू।

तथा च –

"गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनि: सृता।।"

भावार्थ:-श्रीमद्भगवद्गीतां सम्यक् यथायथं पठित्वा अर्थभावेन ह्रदि निधानं मुख्यं कर्तव्यं, या हि स्वयं पद्मनाभेश्वरश्रीविष्णुमुखात् निस्सृता। एवं श्रीमद्भगवद्गीता मानवजीवनस्य सर्वासां समस्यानां समाधानं मन्यते। प्रत्येकं संस्कृत ग्रन्थं मानवकल्याणे महत्त्वपूर्णा भूमिका निर्वहति।

प्रीति
शास्त्री (द्वितीय वर्ष)

सदाचार:

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु:।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वा यं नावसीदति।। 1 ।।
श्व: कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराहिकम्।
नहि प्रतीक्षते मृत्यु कृतमस्य न वा कृतम् ।। 2 ।।
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष: धर्म: सनातन:।। 3 ।।
सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्य सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन ।। 4 ।।
श्रेष्ठं जनं गुरूं चापि मातरं पितरं तथा।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा।। 5 ।।
मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जन:।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जयेत् ।। 6 ।।

स्वाति
शास्त्री (तृतीय वर्ष)

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु:। नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वा यं नावसीदति।।

हिन्दी-मनुष्य के शरीर में रहने वाला आलस्य ही मनुष्य का सबसे महान् शत्रु होता है तथा परिश्रम जैसा कोई मित्र नहीं होता, क्योंकि परिश्रम करने वाला व्यक्ति कभी दु:खी नहीं होता, जबकि आलस्य करने वाला व्यक्ति सदैव दु:खी रहता है।

राकेश शर्मा
शास्त्री (तृतीय वर्ष)

हास्य कणिका:

न्यायधीश:-भो: ! किं त्वं जानासि, यदि असत्यं वक्ष्यसि तर्हि कुत्र गमिष्यसि ?
अपराधी - आम् श्रीमन्। नरकं गमिष्यामि।
न्यायधीश: - अथ चेत् सत्यं वक्ष्यसि तर्हि ?
अपराधी - कारागारं गमिष्यामि श्रीमन्।

गुरू: (छात्रान् प्रति) – यदि अत्र देव: प्रत्यक्ष: भवेत् तर्हि भवन्त: किं – किं प्रार्थयेयु: ?
प्रथम: छात्र: - अहं तु धनं प्रार्थयिष्यामि।
द्वितीय: छात्र: - अहं तु गृहं प्रार्थयिष्यामि।
तृतीय: छात्र: - अहं तु प्रभुत्वं प्रार्थयिष्यामि।
गुरू: - भवन्त: सर्वे मुर्खा: सन्ति। अहं तु विद्या बुद्धिं च प्रार्थयिष्यामि।
छात्रा: - यस्मिन् यत् नास्ति तद्व स: प्रार्थयति, गुरूवर्य।

पति: (उच्चै:, पत्नीं प्रति) – मम स्नानाय उष्णं जलं शीघ्रम् आनय, अन्यथा .....।
पत्नी (सक्रोधम्) –अन्यथा भवान् किं करिष्यति।
पति:(सस्मितम्) – किं करिष्यामि ? शीतलजले एव स्नानं करिष्यामि।

मातुल: (श्रीधरं प्रति)-वत्स, त्वं कथं न स्वाध्यायं करोषि ? किं त्वं जानासि यत् पं. जवाहरलाल नेहरू यदा तव वयसि आसीत् तदा स: स्वकक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्नोति स्म ?
श्रीधर – जानामि मातुल! जानामि , पं. जवाहरलाल नेहरू यदा भवत: वयसि आसीत् तदा स: भारतदेशस्य प्रधानमन्त्री आसीत्।

जनक: (अङ्कपत्रं दृष्ट्वा सक्रोधं पुत्रं प्रति) – धिक् वत्स, किमिदम् ? आंग्लभाषायां षड्त्रिंशत् (३६), गणितविषये पञ्चत्रिंशत् (३५), विज्ञानविषयेऽपि पञ्चत्रिंशत् (३५), हिन्दीभाषायां सप्तत्रिंशत् (३७) अङ्का: त्वया लब्धा:। धिक् त्वां धिक् !
माता (पतिं प्रति) – स्वामिन् ! इदं पुत्रस्य अङ्कपत्रं नास्ति। इदं तु भवत: अङ्कपत्रम् अस्ति । इदं मया भवत: पेटिकायां प्राप्तम्।

एकदा त्रय: जना: (अमेरिकादेशीय:, नाइजीरियादेशीय:, अन्यदेशस्य ईर्ष्यालवश्च)–भगवत: शिवस्य तपस्याम् अकुर्वन्। तेषां तपसा प्रसन्नो भूत्वा शिव: प्रत्यक्ष: अभवत् अकथयत् च -पुत्र वरं वरय–
प्रथम:-भगवन् , धनं ददातु।
शिव:-तथास्तु।
द्वितीय:-भगवन्, मह्यं गौरवर्णं ददातु।
शिव:-तथास्तु।
तृतीय:-(प्रथमस्य द्वितीयस्य च धनं रूपं च दृष्ट्वा ईर्ष्यावशात्)– भगवन् , प्रथमं द्वितीयं च पूर्ववत् करोतु।

हरि ओम् हरि ओम्
पति:-हरि ओम् भोजने किमस्ति अद्य ?
पत्नी–विषम्।
पति:-अहं विलम्बेन आगमिष्यामि त्वं खादित्वा शयनं कुरू।

भगत राम
शास्त्री तृतीय वर्ष

एकः काकः तृषापीडितः!

एकः काकः तृषापीडितः
जलं नालभत दूरे दूरे।
वृक्षाद् वृक्षं गतः वराकः
ग्रामे ग्रामे नगरे नगरे ॥ 1 ॥
एकं सहसा घटं दृष्टवान्
घटे जलं दृष्टं बहुदूरे।
खण्डं खण्डं पाषाणानां
क्षिप्तवान् काकः जलमध्ये ॥ 2 ॥
घटकण्ठं सम्प्राप्तं नीरं
पीत्वा सन्तुष्टः खलु काकः।
बुद्धिपूर्वकं यत्नं कुरुते
वद न सफलतां लभते का ? कः? ॥ 3॥

कुसमा
शास्त्री अंतिम वर्ष

श्लोक संस्कृत

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।

अर्थात : मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य होता है, और परिश्रम सच्चा मित्र होता है। क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं हो सकता।

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात : जिस मनुष्यों में विद्या का निवास है, न मेहनत का भाव, न दान की इच्छा और न ज्ञान का प्रभाव, न गुणों की भिव्यक्ति और न धर्म पर चलने का संकल्प, वे मनुष्य नहीं वे मनुष्य रूप में जानवर ही धरती पर विचरते हैं।

सुखार्थी त्यजते विद्यां विद्यार्थी त्यजते सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।।

अर्थात : सुख चाहने वाले को विद्या और विद्या चाहने वाले को सुख त्याग देना चाहिए। क्योंकि सुख चाहने वाले को विद्या नहीं मिल सकती और विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ।

सुनीता ठाकुर
शास्त्री अंतिम वर्ष

हास्य कणिका:

जानासि त्वं सर्वे जनाः मम। जनकस्य अग्रे शिरः नमन्ति ?
सुधीर ! किं तव पिता प्रधानमन्त्री अस्ति ?

कवेः पत्नी निद्राधीना आसीत् तस्याः पादस्य समीपं एकः सर्पः उपविशन् आसीत्।
कविः - दर्शतु दर्शतु! शीघ्र दर्शतु।
सर्पः - गच्छ
मूर्खः ! चरणवन्दना कुर्वन् अस्मि ।
एषा अस्माकं कुलदेवी अस्ति!!!

पूनम कुमारी
शास्त्री अंतिम वर्ष

अद्भुत स्वप्न ?

मम् अद्तं स्वप्नं,
सिंहो वदति म्याऊं-म्याऊं
हस्ति धावति यथा चित्रकः
सर्पः वदति भौं-भौं-भाऊं।
भल्लूकः दुर्बलः तथा यत्
यथा चमरपुच्छा संजातः।
मूषकभीता धावति मार्जारी
शशकः धावति शृंगयुतः।

शालिनी
शास्त्री अंतिम वर्ष

सुभाषितानि!

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं जलमन्न सुभाषितम्।
मूढै: पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।।1।।
सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रवि:।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।2।।
दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।।3।।
सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भि: किञ्चिदाचरेत्।।4।।
धनधान्यप्रयोगेषु विद्याया: संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्ज सुखी भवेत्।।5।।

अंजना देवी
शास्त्री अंतिम वर्ष

सुभाषितानि

नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्॥
त्यजन्ति मित्राणि धनैर्विहीनं पुत्राश्च दाराश्च सुहृज्जनाश्च।
तमर्शवन्तं पुराश्रयन्ति अर्थो हि लोके मनुषयस्य बन्धुः॥
अहो दुर्जनसंसर्गात् मानहानिः पदे पदे।
पावको लौहसंगेन मुद्गरैरभिताड्यते॥
स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा।
सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम्॥
विकृतिं नैव गच्छन्ति संगदोषेण साधवः।
आवेष्टितं महासर्पैश्चनदनं न विषायते॥
आलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्याः कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रं अमित्रस्य कुतो सुखम्।।
अपूर्व कोपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धमायाति क्षयमायाति संचयात्॥

मधुबाला
शास्त्री अन्तिम वर्ष

सदाचारः!

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान्रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।1।।
श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराहिकम्।
नहि प्रतीक्षते मृत्यु: कृतमस्य न वा कृतम्।।2।।
सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात्एष धर्म: सनातन:।।3।।
सर्वदा व्यवहारे स्यात्त् औदार्य सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन।।4।।
श्रेष्ठ जन गुरुं चापि मातरं पितरं तथा।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा।।5।।
मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जयेत्।।6।।

अंजली
शास्त्री अंतिम वर्ष

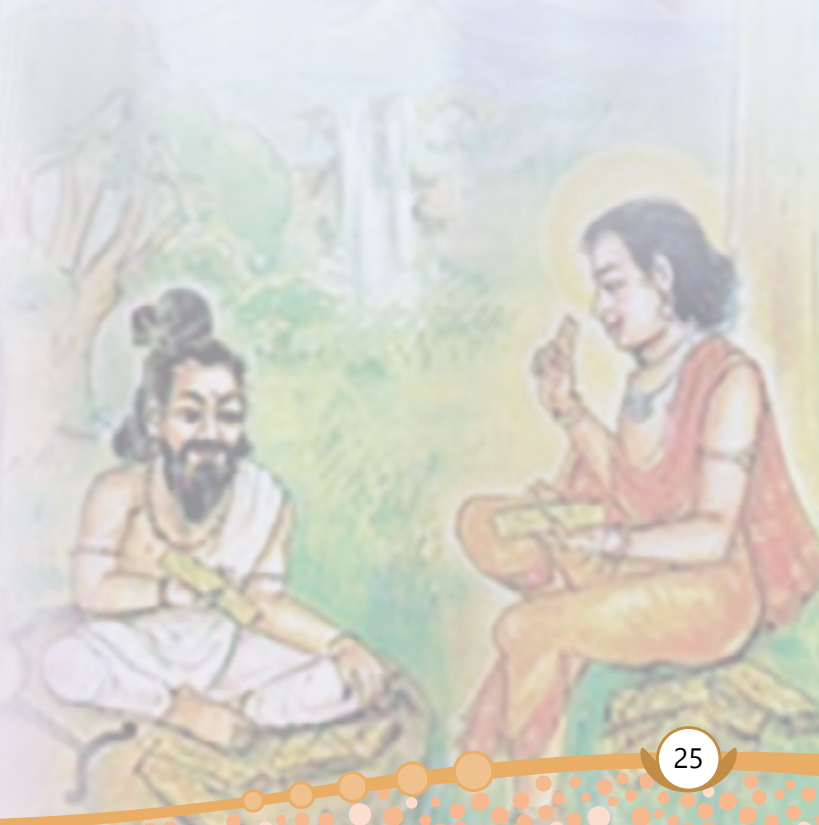

अमृतं संस्कृतम्

विश्वस्य उपलब्धासु भाषासु संस्कृत भाषा प्राचीनतमा भाषा अस्ति। भाषेयं अनेकाषां भाषाणां जननी मता। प्राचीनयो: ज्ञानविज्ञानयो: निधि: अस्यां सुरक्षित:। संस्कृतस्य महत्वविषये केनापि कथितम्- "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।" इयं भाषा अतीव वैज्ञानिकी। केचन कथयन्ति यत् संस्कृतमेव सङ्गणकस्य कृते सर्वोतमा भाषा। अस्या: वाङ्मयं वेदै,पुराणै,नीतिशास्त्रै: चिकित्सा शास्त्रादिभिश्च समृद्धम्अस्ति। कालिदासादीनांविश्वकवीनांकाव्यसौन् दर्यम्अनुपमम्। कौटिल्य रचितम् अर्थशास्त्रंजगति प्रसिद्धमस्ति। गणित शास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमम् आर्यभट्टेन कृतम अकरोत्। चिकित्सा शास्त्रे चरक सुश्रुतयो: योगदानं विश्वप्रसिद्धम्। संस्कृते यानि अन्यानिशास्त्राणिविद्यन्ते तेषु:- वास्तुशास्त्रं, रसायनशास्त्रं, खगोलविज्ञानं, ज्योतिष शास्त्रं विमान शास्त्रं इत्यादीनि उल्लेखनीयानि।

संस्कृते विद्यमाना: सूक्तय:अभ्युदयायप्रेरयन्ति,यथा:- सत्यमेव जयते, वसुधैव कुटुंबकम्,विद्ययाऽमृतमश्नुते,योग:कर्म सुकौशलम् इत्यादय। सर्वभुतेषु आत्मवत्व्यवहारं कर्तुं संस्कृत भाषा सम्यक्शिक्षयति।

केचन कथयन्ति यत् संस्कृतभाषायां केवलं धार्मिकं साहित्यंवर्तते-एषा धारणा समीचीना नास्ति। संस्कृत-ग्रन्थेषु मानव जीवनायविविधा: विषया: समाविष्टा: सन्ति। महापुरुषाणांमति:, उत्तम जनानांधृति: समान्य जनानां जीवनपद्धत: च वर्णिता: सन्ति । अत: अस्माभि: संस्कृतम् अवश्यमेव पठनीयम्। तेन मनुष्यस्य समाजस्यच परिष्कार: भवेत्।

उक्तञ्च:-

अमृतं संस्कृतंमित्र!
सरसंसरलंवच: ।
भाषासुमहनीयंयद्
ज्ञानविज्ञानपोषकम्।।

लुकेश कुमार
शास्त्री तृतीय वर्ष

"गीता सुगीता कर्तव्या"

श्रीमद्भगवद् गीता महाभारतं इत्यनेन नामधेयेन सुप्रथितस्य विशाल कलेवरस्य महाग्रन्थस्य सारतमो अश:। साश्लोकानां सप्तशत्या नि:-श्रेयसाधि-गमनस्योपायान् सुबोधायां भाषायामभिव्यनक्ति। तदीया वस्तु प्रकथनप्रणाली सरला अस्ति तस्मात् सामान्यज्ञानसम्पन्नों अपि जनोअन्तरेणाधिकमायासं तामवोद्वमर्हति किञ्च सकलमपि प्रपञ्चपरि च्छदमुपेक्ष्यानेन गीताराजमार्गेण स्वकीयं प्राप्तव्यमास्पदमासादयितुं शक्नोति गीतायामुदेश्यकथनमिदं वर्तते।

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपदाद् विनि: सृता।।

अर्थातः - श्रीमद्भगवदगीतां सम्यक् प्रकारेण पठित्वा भाव सहितार्था: अन्त:करणे धारणं मुख्यं: कर्तव्यं वर्तते यत् स्वयं श्रीपद्मनाभविष्णोः मुखार- विन्दात् निष्पन्ना वाणी वर्तते। गीताया: शिक्षेयं यन्मानवो भगवन्तं स्मरन् स्मस्तान्यपि धार्मिकाणि सामाजिकानि कर्माणि च कुर्वन् यथावत् संसारे-समरे युध्येत। शास्त्राणि सर्वाणि यत् किमप्युपदिशन्ति तदेव गीता सरलं सरसं सारभूतञ्च विधाय प्रस्तौति।

तीर्थ रामः
शास्त्री तृतीय वर्ष

मङ्गलपद

अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटम्बकम्।।

संस्कृत भाषा विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। अस्य व्याकरणं सम्यक् परिष्कृतं शुद्धमर्थाद् दोषरहितं व्याकरणेन संस्कारितं वा यत्तदेव संस्कृतम्।

एवञ्च सम् उपसर्गपूर्वकं डुकृञ् करणे धातो: क्त प्रत्यये सति निष्पन्नो अयं शब्द संस्कृतभाषेति नाम्ना सम्बोध्यते।

सैव देवभाषा,देववाणी,अमरवाणी, गीर्वागित्यादिभिर्नामभि: कथ्यते। इयमेव भाषा सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी भारतीय संस्कृते प्राणस्वरूपा भारतीय घर्म दर्शनादिकानां प्रसारिका सर्वास्वपि विश्वभाषासु प्राचीनतमा सर्वमान्या च मन्यते।

अस्माकं समस्तमपि प्राचीनं साहित्यं संस्कृतभाषायामेव रचितमस्ति समस्तमपि वैदिकसाहित्यं, रामायणं-महाभारतं, पुराणानि, दर्शन ग्रन्था:, स्मृतिग्रन्था:, काव्यानि, नाटकानि, गद्यलिखिता: प्राप्यन्ते। गणितं, ज्योतिषं, काव्यशास्त्रमायुर्वेद:, अर्थशास्त्रं, राजनीतिशास्त्रं, छन्दशास्त्रं, ज्ञान-विज्ञानं तत्वजातमस्यामेव संस्कृतभाषायां समुपलभ्यते। अनेन संस्कृतभाषाया: विपुलं गौरवं स्वयमेव सिध्यति।

संजय
शास्त्री अंतिम वर्ष

संस्कृत भाषाया: महत्वम्

वाणी रसवती यस्य यस्य श्रमवती क्रिया।
लक्ष्मी: दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितो।।
संस्कृतम् जगत: अति प्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते।
संस्कृतम् भारतस्य जगत:च भाषासु प्राचीनतमा।
संस्कृता वाक् भारती सुरभारती, अमर भारती, अमरवाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी, गीर्वाणी, देववाणी, देवभाषा, देवी भाषा, इत्यादिभि: नामभि: एतद्भाषा प्रसिध्दा।
भारतीय भाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दा: उपयुक्ता:।
संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उद्ता:।
तावदेव भारत यूरोपीय, भाषावर्गीया: विविधभाषा: संस्कृत प्रभाव संस्कृत शब्द प्राचुर्यं च प्रदर्शनयन्ति।
व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जननांग संस्कार प्रदायिनी भवति।
अष्टाध्यायी इति नाम्नि महर्षि पाणिने: विचरना जगत: सर्वासां भाषाणाम् व्याकरण ग्रन्थेषु अन्यतमा वैयाकरणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणास्थानं वर्तते।
संस्कृतवाङ्मयं विश्ववाङ्मये स्वस्य अद्वितीयं स्थानं अलङ्करोति।
संस्कृतस्य प्राचीनतम ग्रन्था: वेदा: सन्ति।
वेदशास्त्र, पुराणे, इतिहास, काव्य, नाटक, दर्शनादिभि: अनन्तवाङ्मयरूपेण विलसन्ति।
एषां वाक् न केवल घर्म, अर्थ, काम, मोक्षात्मका: चतुर्विधपुरूषार्थहेतु भूता: विषया: अस्या: साहित्यस्य शोभां वर्धयन्ति अपितु धार्मिक, नैतिक, अध्यात्मिक, लौकिक, पारलौकिक विषयै: अपि सुसम्पन्ना इयं देववाणी।

संजय
शास्त्री अंतिम वर्ष

हिन्दीविभागस्य सम्पादक:

Editor of Hindi Department

प्रो. वन्दना कुमारी

सम्पादकीय

प्रिय विद्यार्थियों

आप सभी को महाविद्यालय की पत्रिका शैली मंजरी का एक लंबे अंतराल के बाद पुनः संस्करण प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं। इस पावन पुस्तिका को आप को सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्षानुभूति हो रही है। मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझती हूं कि महाविद्यालय की पत्रिका के पुनःसंस्करण प्रकाशन में अपना सहयोग दे सकी। हर विद्यार्थी में कुछ न कुछ प्रतिभा छिपी होती है। यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक व सृजनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने का एक छोटा सा माध्यम है। यदि जीवन की शुरुआत आप एक छोटे मुकाम परंतु दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के साथ करते हैं, तो जीवन में कोई आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने से नहीं रोक सकता। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में एक सुनिश्चित एवं उन्नत लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। बिना किसी लक्ष्य के जीवन पशु तुल्य है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगन, कड़ी मेहनत और सतत् प्रयास की आवश्यकता है। लक्ष्य को आंखों में बसाकर अर्जुन ने मछली की आंख को भेदने में सफलता पाई थी। शिक्षा का क्षेत्र हो या कोई अन्य, दृष्टि लक्ष्य पर हो तो आपके जीवन में सफलता का सूर्योदय आवश्यक होगा।

प्यारे बच्चों आपको जीवन में आने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों को भी समयानुसार ढालकर उन्हें अपने अनुकूल बनाना सीखना होगा, हर चुनौती का धैर्य के साथ सामना कर अपने महाविद्यालय, अपने क्षेत्र व अपने देश का नाम रोशन करना है। वर्तमान जीवन शैली की जटिलता को देखते हुए आपको पहाड़ों को चीरने व दरिया को मोड़ने वाली ताकत अपने आप में भरनी है। इसीलिए बार-बार यह कहती हूं-

हम दरिया हैं, हमें अपना हुनर मालूम है
जहां भी हम जाएंगे, रास्ता खुद ब खुद बन जाएगा

प्रिय विद्यार्थियों एक बात से आप सब को अवगत करवाना मै अति आवश्यक समझती हूं जो व्यक्तित्व विकास के मूल रूप में व प्रथम पंक्ति में होना चाहिए वह है व्यक्ति का चरित्र। प्यारे बच्चों, अपने लक्ष्य से पूर्व अपने चरित्र का निर्माण सकारात्मक दिशा में करें। एक सच्चरित्र आपको सकारात्मक ऊर्जा से भर देगा। अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति के नैतिक मूल्य जिनका दिन प्रतिदिन पतन होता जा रहा है। उन्हें प्राथमिकता के साथ अपने चरित्र में, अपने व्यवहार में स्थान दें क्योंकि अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति व उनसे जुड़े मूल्य का सरंक्षण करना हमारा परम धर्म ही नही अपितु हमारा परम कर्तव्य भी है। आप भले ही एक बड़े आदमी न बन पाए, पर एक अच्छे मानव बनने का प्रयास जरूर करना। सत्य, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता, निष्पक्षता, दृढ़ता, साहस, धैर्य और आत्म नियंत्रण जैसे गुणों को अपने व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बनाएं। यह गुण आपको आंतरिक शक्ति व आत्मसम्मान प्रदान करेगा जिन की तपिश आपको जीवन भर सकारात्मक ऊर्जा देने का कार्य करेगी वह आपको जीवन में कभी भी असफल नहीं होने देगी। वर्तमान में इन गुणों का ह्रास हो रहा है, इसलिए अनायास ही मुख से यह पंक्तियां प्रस्फुटित हो उठती है :

सब कुछ हो रहा है ,
इस तरक्की के जमाने में,
पर गजब देखिए ....
आदमी इंसान नहीं बन पा रहा है

वंदना कुमारी
सहायक आचार्या
हिन्दी

हे ईश्वर!

कभी ये हिमालय पीने के पानी के लिए तरसता रहा,
आज कई जानें इस पानी से गई लेकिन मौसम बेधड़क बरसता रहा।
इसे करिश्मा कहूँ या अपने-अपने भाग्य की रेखा,
हर तरफ सड़क, खेत, घर बिखरे पड़े है। जहां भी मैने नजर घुमाकर देखा।।
क्या मेरा यही कसूर है जो एक आशियाना मजदूरी करके परिवार के लिए बनाया,
आपने बरसात का नाम देकर उसे जो एक पल भर मे पानी के साथ बहाया।।
अब न कुछ करने की न जीने की तमना है क्या करूँ सामने नजर एक लाचार परिवार का साया आता है,
हौसला तो अब कायम कर दूँ पर आपके सिवाय किस पर विश्वास करूँ यह समझ नही आता है।।
प्रभु आपके विश्वास का फल ऐसा क्यों मिला जो आपका दिया हुआ था वही मुझे छीन लिया,
अगर छीनना ही था तो मुझे छीन लेते कम से कम मेरे परिवार का आशियाना तो ऐसे रहने दिया होता।।

लुकेश कुमार
शास्त्री अंतिम वर्ष

मेरी दुनिया पिता

जिंदगी का पहला हीरो और आखिरी दोस्त
होता है पिता, हर खुशी का खज़ाना होता है पिता।
अपने हर दु:खों को भुलाकर
हमारी खुशी में शामिल होता है पिता।
जिंदगी के हर लम्हे को खास बनाता है पिता।

हर छोटी-बड़ी ख्वाइशों को पूरा करता है पिता।
हमारी निराशा को आशा में बदलता है पिता।
हमारे सपनों के लिए अपने सपनों को छोड़ देता है पिता।
हमें खुश देखने के लिए हर गम अकेले पी जाता है पिता।

जिसके बिना हर त्यौहार सूना
जिसके बिना हर खुशी अधूरी
जिसके बिना होती नहीं मेरी दुनिया पूरी
वो है मेरे प्यारे पिता।

जो हमें खुश रखने के लिए अपने सारे दु:ख छुपाते हैं,
खुद भूखे रहते हैं पहले हमे खिलाते हैं,
मत करना यारो अपमान कभी उस इन्सान का,
क्योकि धरती पर भगवान का साया
माता-पिता कहलाते हैं।

भगत राम
शास्त्री अंतिम वर्ष

प्राचीन भाषा-संस्कृत

जानकारी हासिल करना मनुष्य का जन्म से ही स्वभाव रहा है। यही कारण है कि आज हमारे सामने इतने अविष्कार हो चुके है कि हमारा जीवन बहुत सरलता से निकल रहा है। लेकिन किसी भी कार्य के लिए सबसे ज्यादा जरूरी चीज होती है भाषा।

बिना भाषा के हमारा किया कोई भी कार्य हम दूसरे को नही बता सकते। आज दुनिया भर में 6900 भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। इन सभी भाषाओं की जननी है संस्कृत भाषा।

संस्कृत भाषा दुनिया की सबसे पुरानी भाषा है। इसे देववाणी अथवा सुरभारती भी कहा जाता है। इस भाषा के वर्ण (letters) ऋषि मुनियों द्वारा गहरे ध्यान के बाद इस दुनिया को प्राप्त हुए । माना जाता है कि महर्षि पाणिनि शिव जी के बहुत बड़े भक्त थे। पाणिनि जी की आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव जी ने डमरू बजाकर तांडव नृत्य किया। उसी डमरू के शब्दों को सुनकर महर्षि पाणिनि ने व्याकरण के अष्टाध्यायी नामक ग्रंथ की रचना की। महृषि पाणिनी के द्वारा लिखे संस्कृत व्याकरण का अनुसरण कर ही दुनिया भर के अन्य भाषाओं का व्याकरण निर्मित हुआ है। महर्षि पाणिनि जी को संस्कृत भाषा का जनक भी माना जाता है।

संस्कृत भाषा दुनिया की सबसे पुरानी उल्लिखित भाषाओं में से एक है। संस्कृत में हिन्द धर्म से संबंधित लगभग सभी ग्रंथ लिखे गए है। बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के भी कई महत्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं। संस्कृत को विश्व की अन्य भाषाओं की जननी माना जाता है । दुनिया भर में सिर्फ संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जो पूरी तरह सटीक (accurate) है। इसका कारण है इसकी सर्वाधिक शुद्धता। कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए भी संस्कृत को ही सबसे उपयुक्त भाषा माना गया है।

मात्र 3000 वर्ष पूर्व तक भारत में संस्कृत भाषा बोली जाती थी तभी तो ईसा से 500 वर्ष पूर्व महर्षि पाणिनी ने दुनिया का पहला व्याकरण ग्रंथ लिखा था, जो संस्कृत का था। इसका नाम 'अष्टाध्यायी ' है। संस्कृत विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक (ऋग्वेद) की भाषा है। इसीलिए इसे विश्व की प्रथम भाषा मानने में कहीं किसी संशय की संभावना नहीं है। संस्कृत केवल एक मात्र भाषा नहीं है अपितु संस्कृत एक विचार है, संस्कृत एक संस्कृति है, एक संस्कार है। संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है, सहयोग है, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना है।

Nasa का कहना है कि 6th और 7th generation super computers संस्कृत भाषा पर आधारित होंगे । कहा जाता है कि अरबी भाषा को कंठ से और अंग्रेजी को केवल होंठो से ही बोला जाता है किंतु संस्कृत में वर्णमाला को स्वरों की आवाज के आधार पर कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, अंत:स्थ और ऊष्म वर्गों में बांटा गया है।

संस्कृत वाक्यों में शब्दों को किसी भी क्रम में रखा जा सकता है। इससे अर्थ का अनर्थ होने की बहुत कम या कोई संभावना नहीं होती। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सभी शब्द विभक्ति और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे -अहं गृहं गच्छामि अथवा गच्छामि गृहं अहं दोनों ही ठीक है। Nasa के वैज्ञानिकों के अनुसार जब वो अंतरिक्ष ट्रेवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनके वाक्य उलट हो जाते थे। इस वजह से मैसेज का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने कई भाषाओं का प्रयोग किया लेकिन हर बार यही समस्या आई। आखिर में उन्होंने संस्कृत में मैसेज भेजा क्योंकि संस्कृत के वाक्य उलटे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते।

प्रत्येक भारतीय को संस्कृत भाषा का अध्ययन अवश्य करना चाहिए और यत्न करना चाहिए कि भविष्य में संस्कृत भाषा राष्ट्र भाषा बने तभी हम भारत के भाषा संबंधी प्रान्तीयता आदि के कलह को दूर भगा सकते है और तभी हम संसार से सच्ची विश्वशान्ति की स्थापना कर सकते है।

पल्लवी
शास्त्री अंतिम वर्ष

समय का महत्त्व

समय के महत्त्व को है सभी ने जाना,
किसी ने इसको शुरू से माना,
किसी ने बाद में पहचाना।
जो भी करता समय बर्बाद,
बाद में समय उसको कर देता बर्बाद,
और वह जीवन भर रह जाता है बेकार
जिसने समय के महत्त्व को जाना,
उसका जीवन बन गया है सुहाना,
बूंद बूंद से भरती गागर,
समय नियोजन से बनता है जीवन।
पानी की लहरें करती नहीं किसी का इंतज़ार
समय भी कभी ठहरता नहीं किसी के द्वार,
समय नियोजन है ज़रूरी,
इससे ही होगी हमारी अभिलाषा पूरी।
करता जो समय बर्बाद,
हो जाते हैं बुरे उसके हालात,
जिसने किया समय पर काम,
उसका जीवन हो गया साकार।
किया जिसने समय का वेस्ट,
टल गया उसके जीवन का टेस्ट,
बड़े बड़े नेताओं ने भेद समय का जाना,
तभी सब लोगों ने उन्हें है पहचाना।
कैसे कर पाएंगे आज का विद्यार्थी,
देश का प्रतिनिधित्व,
जब खतरे में पड़ जाएगा,
स्वयं उसका अपना ही अस्तित्व।
अगर वह करेगा समय नियोजन,
तभी पढ़ लिखकर बनेगा समझदार,
और देश का बनूंगा आधार।
समय नियोजन है बहुत ज़रूरी,
इसके बिना हर बात है अधुरी।

आरती ठाकुर
शास्त्री तृतीय वर्ष

प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा संबंध

प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरा संबंध है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य के लिए धरती उसके घर के आंगन, आसमान छत, सूर्य-चाँदू तारे दीपक, सागर-नदी-पानी के मटके और पेड़-पौधे आहार के साधन है। इतना ही नहीं, मनुष्य के लिए प्रकृति से अच्छा गुरु नहीं है।आज तक मनुष्य ने जो कुछ हासिल किया वह सब प्रकृति से ही सीखकर किया है। प्रकृति हमें महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है। जैसे: पतझड़ का मतलब पेड़ का अन्त नहीं है और जैसे कि पुराणों में कहा भी गया है कि जो मनुष्य नए वृक्ष लगाता है, वह स्वर्ग में उतने ही वृक्षों तक फलता-फूलता है, जितने वर्षो तक उसके द्वारा लगाए गए वृक्ष फलते-फूलते हैं।

सुनैना
प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष

धरती माँ पुकारे त्राहि माम

धरती माँ का चिरा सिना तूने,
फिर भी इस माँ ने तुझे फल दिए फूल दिए दिया अन्न।
पेड़ों को काटा तूने फिर भी,
दी ठण्डी हवा और शुद्ध वातावरण।
प्रकृति थी ईश्वर ने बनाई तेरे लिए,
जल, हवा, अग्नि, वायु और खुला आसमान।
तुझको रास न आया ये शुद्ध वातावरण,
तूने तहस- नहस किया सब कुछ सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए।
अब देख प्रकृति का तांडव हिल उठे पहाड़,
कांप उठी धरती फट रहा है आसमान।
देख मंजर, दहला तो होगा दिल तेरा इंसान,
ये देने वाली है, इसने तुझे सब कुछ दिया।
अब भी वक़्त है तू संभल जा, तू संभल जा हे इंसान,
धरती माँ पुकार रही त्राहि माम त्राहि माम।

नेहा
प्राक शास्त्री द्वितीय वर्ष

बचपन

सबसे प्यारा क्या है बचपन
निडर बेखौफ है ये बचपन
सबसे कीमती है ये बचपन
बीत जाता है ये बचपन
याद आता है ये बचपन
मां की गोद में खिलता है ये बचपन,
पिता के कंधो पर झूल जाता है ये बचपन,
चांद सितारों मे खोया रहता है बचपन,
जानें कहां खो जाता है ये बचपन
क्यों याद आता है ये बचपन।

पूनम कुमारी
शास्त्री अंतिम वर्ष

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा,
हर मुशकिल, का हल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा,
मरुस्थल से भी, फिर जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधो को पानी दे,
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे।
सीने मे उम्मीदो, को जिंदा रख,
समंदर से भी, गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरनें की,
जो कुछ थमा थमा है, चल निकलेगा।
कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।

सुमन कुमारी
प्रथम वर्ष

कोरोना

पूरी दुनिया हिला दी एक वायरस ने सभी यह देखकर हैरान थे कौन बड़ा, कौन छोटा सभी कमरों में बंद और परेशान थे। आजादी आजादी करने वालों के मुंह पर चुप्पी छाई थी इस बार सब को कैद करने की प्रगति ने मुहर लगाई थी कुछ के लिए आराम तो कुछ के लिए फैमिली होलीडे। गरीब बेचारा पिस गया जिसका हर सूरज भूखे पेट भर रहा था , जहां देखो कोई डरा सहमा नजर आ रहा था, जहां देखो हर कोई डरा सहमा घूम रहा था, मुंह पर कपड़ा बांधे हुए जैसे कोई उन्हें ढूंढ रहा था। मौत की खबरें रोज अखबारे भर रही थी मेरा बच्चा भी कमाने शहर गया है, मां यह सोच कर डर रही थी सब कुछ थम सा गया था, जैसे (pubg) का फाइनल जॉन चल रहा था सब गाने वाने छोड़कर मोबाइल पर जान बचाने का रिंगटोन चल रहा था। काम धंधा सब बंद, जवान बेटा फिर बाप के पैसों पर पल रहा था, लाचारी की हद तो देखो देश का गुजारा भी शराब बेचकर चल रहा था । हर किसी का रोज पेपर इम्तिहान रोज आउट ऑफ सिलेबस चल रहा था, सब झक्छोर कर रख दिया जिससे, ऐसा मौत का गेम चल रहा था।

नैंसी शर्मा
शास्त्री प्रथम वर्ष

हास्य कविता

ज्ञान बिक गये, ध्यान बिक गये
कलम बिकी, सम्मान बिक गये।
छोटी- छोटी सुविधाओं पर,
बड़े-बड़े ईमान बिक गये।
सोच समझ कर मुँह से बोलो,
दीवारों के कान बिक गये।
उनसे पूछ जिंदगी क्या है,
जिनके सब अरमान बिक गये।
नग्न रह गई जीवित लाशें,
मुर्दो के परिधान बिक गये।
चोरों को मत दोष दीजिये,
घर के ही दरबान बिक गये
पशुओं की कीमत लगती है,
बिना मूल्य इंसान बिक गये।

दिनिशा
प्रथम वर्ष

दादा दादी और पोता पोती के बीच संबंध

पहले के समय में बच्चों को उनके दादा-दादी के साथ समय व्यतीत करने का काफी मौका मिलता था परंतु अब अलग परिवार बसाने की बढ़ती प्रणाली के प्रवृत्ति के कारण एक दूसरे से कम ही मिल पाते हैं जहां तक माता-पिता की बात है तो वे कई निजी और व्यवसायिक प्रतिबद्धताओं के कारण अपने बच्चों को दादा-दादी के पास ले जाने का प्रयास में नहीं बचा पाते हैं और उन्हें किसी भी हाल में एक दूसरे के साथ समय व्यतीत करने के लिए कोशिश करनी होगी।

दादा-दादी परिवार की जड़ के रूम में जाने जाते हैं अपने अनुभव और समझ की वजह से वह नई पीडिया को आगे बढ़ाने में उनकी मदद करने के लिए अपने जीवन के मूल्यवान सबको को साझा करते हैं।

वे अपने पोता पोती की खूब सेवा करते हैं और उन्हें बेहतर इंसान बनने की उनकी उम्मीद करते हैं संयुक्त परिवार में जब कोई बच्चा दादा-दादी, चाचा-चाचा और अपने भाई बहनों आदि लोगों के साथ रहता है तो वह सब के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए ऐसा उसे सीखने को मिलता है।

ऐसा बच्चों को शायद ही कभी लोगों के साथ रहने बातचीत करने में कठिनाई नहीं आती है बच्चे अकसर हमारी नकल करते हैं जब वह एक अलग विषय परिवार में रहते हैं तो वे अवसर माता या पिता की आदतों को सीख कर अलग तरीके से बर्ताव करना शुरू करते हैं भी अलग-अलग लोगों को संपर्क में आकर सीखते हैं कि कैसे एक कार्य को अलग-अलग तरीकों से किया जाता है और कैसे आंखें बंद करके एक रास्ते पर चलने की बजाय अपनी मनपसंद चुने।

जब घर में हम किसी भी प्रकार का जन्मदिन और त्योहार जैसे सभी विशेष अफसर को घर में एक साथ जातियों बनाते हैं तो वह आपके लिए और अभी विशेष हो जाते हैं।

दादा-दादी परिवार के लिए समर्थन के रूप में कार्य करते हैं। आप उन पर कभी भी भरोसा कर सकते हैं जैसे-जैसे वे बूढ़े हो जाते हैं तो उन्हें भी ध्यान और देखभाल की आवश्यकता होती है जिसे केवल संयुक्त परिवार में रहकर ही पूरा किया जा सकता है। बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए संयुक्त परिवार व्यवस्था सबसे अच्छी है, यद्यपि यह व्यवस्था धीरे-धीरे लुप्त होते जा रही है, पर कुछ लोग अब भी अकेले परिवार बढ़ाने के चालन की बजाय इसे पसंद करते हैं। दादा-दादी बना सभी और सबसे अच्छी भावनाओं से एक है। यह एक विशेष बंधन है जो दादा-दादी अपने पोता-पोती के साथ अपना बातें साझा करते हैं हमें अपने दादा-दादी के साथ रहना चाहिए तथा उनकी सेवा जरूर करनी चाहिए।।

जतिन शर्मा
प्राक शास्त्री प्रथम वर्ष

बेटी है अनमोल

प्यार का भंडार बेटियां, उम्मीद की किरण बेटियां
बाबुल का दुलार बेटियां, मां के संस्कार बेटियां
भाईयों का रक्षा बंधन बेटियां,
जोड़े जो कच्चे धागों को वो सौभाग्य बेटियां,
पाकर जिसे जगमगाए आंगन वह रत्न है बेटियां,
न जाने क्यों दुनिया के लिए फिर भी बोझ होती हैं बेटियां।

अदिती ठाकुर
प्राक् शास्त्री प्रथम वर्ष

बचपन

बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था
खबर न थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था
माँ की कहानी थी,
परियों का फसाना था
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था
हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था
गम की जुबान न होती थी,
न जख्मों का पैमाना था
रोने की वजह न थी,
न हँसने का बहाना था
क्यों हो गऐ हम इतने बडे,
इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था।

दीक्षा मल्होत्रा
शास्त्री तृतीय वर्ष

परिश्रम

एक बार गिर जाने पर बार-बार उठो तुम,
जो कर सको उसे हज़ार बार करो तुम।
यदि कुछ कर जाने की चाह है तुम में,
उसे मेहनत और लगन से करो तुम।
कठिन परिस्थितियों में तुम अपने आप को अजमाना,
याद रह जाएगा तुम्हारा ये फसाना।
इरादे हो नेक तो तुम पा सकोगे मंजिल अपनी,
बुराई की राह में भरना पड़ता है हर्जाना।
यदि डगमगाने लगे कदम तुम्हारे सच्चाई की राह में,
अपनी ईमानदारी व खुद्दारी को अपने साथ चलाना।
कर्म करने के लिऐ हुआ है जन्म तुम्हारा।
इस बात को तुम अपने जीवन में कभी न भुलाना।

झेलम लता
शास्त्री तृतीय वर्ष

मां

खुदा का काम था मोहब्बत
वो भी मां करने लगी,
खुदा का काम था इबादत,
वो भी मां करने लगी,
खुदा का काम था हिफाज़त,
वो भी मां करने लगी,
देखते ही देखते खुदा के सामने
कोई और परवर-दिगार हो गया।
बहुत रोया, बहुत पछताया, क्योंकि मां को बनाकर
खुदा खुद बेरोजगार हो गया।

ज्योति ठाकुर
शास्त्री तृतीय वर्ष

मेरे प्यारे पापा

यूँ तो दुनिया के सारे गम
मैं हस के ढो लेती हूँ,
पर जब भी आपकी याद आती है
मैं अक्सर रो देती हूँ
मार-मार के पत्थर को
एक जौहरी हीरा बनाता है,
आपकी डांट का मतलब हमको
आज समझ में आता है।
हाँ मैं खुश थी उस बचपन में
जब आपके कंधे पर बैठी थी,
मगर बहुत रोयी थी जब
मेरे कंधे पर आप थे।
हर पल अहसास होता है
आप यहाँ ही हों जैसे,
काश ये हो जाये मुमकिन
मगर ये मुमकिन हो कैसे?
सुधार लूँ मैं गुस्ताखियाँ जिन्दगी की
अब गलती करने पर मुझे कहाँ कोई डांटता है,
अकेले ही जूझती हूँ अब मैं जिन्दगी से
आपकी तरह मेरे दर्द कहाँ कोई बांटता है।
कभी डर लगता था आपकी डांट से
आज आपकी ख़ामोशी मुझे सताती है,
मुझे मालूम है कि अब आप नहीं आने वाले
फिर भी आपकी यादें अक्सर मुझे रुलाती हैं।
किसी चीज की कमी न थी
आप थे तो दुनिया कितनी प्यारी थी
आज परिवार की जरूरतों में जिन्दगी कट रही है
तो अहसास होता है
आपके कन्धों पर जिम्मेवारी कितनी भारी थी।
कैसे चुकाऊंगी कर्ज उस पिता का इस जन्म में
जिनके बूढ़े हाथों ने मेरी तकदीर बनायी थी,
अपने जीवन के सारे रंग छोड़
मेरे भविष्य की सुनहरी तस्वीर बनायीं थी।
ये वादा है कि जब तक जी रही हूँ
आपके दिये संस्कारों पर चलना मेरा काम रहेगा,
हाँ मानती हूँ जिन्दगी में आपका साथ नहीं
मगर मरते दम तक मेरे नाम के साथ आपका नाम आएगा।

कवित्री
शास्त्री तृतीय वर्ष

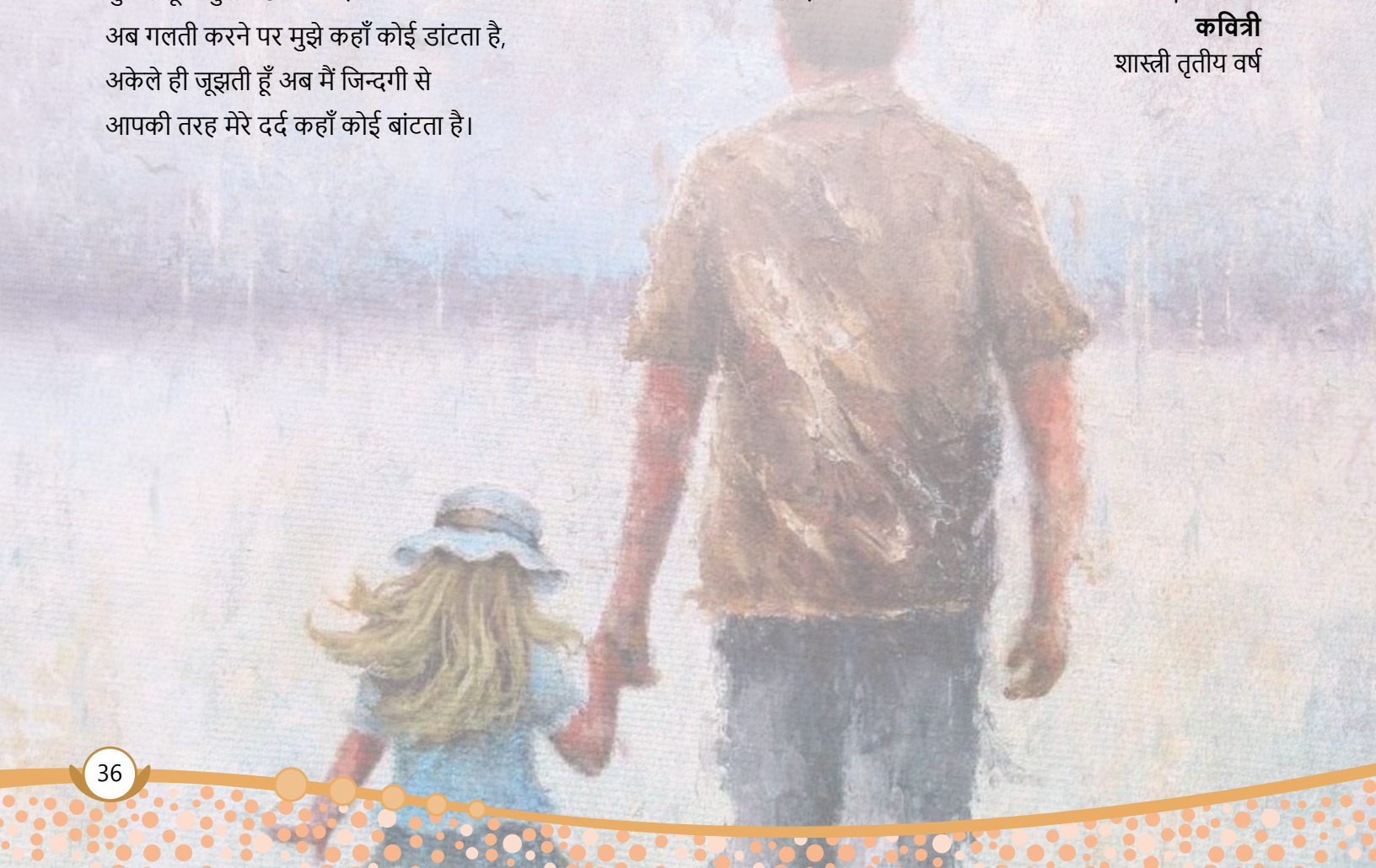

पापा का प्यार

प्यार का सागर ले आते
फिर चाहे कुछ न कह पाते
बिन बोले ही समझ जाते
दुःख के हर कोने में
खड़ा उनको पहले से पाया
छोटी सी उंगली पकड़कर
चलना उन्होंने सिखाया
जीवन के हर पहलु को
अपने अनुभव से बताया
हर उलझन को उन्होंने
अपना दुःख समझ सुलझाया
दूर रहकर भी हमेशा
प्यार उन्होंने हम पर बरसाया
एक छोटी सी आहट से
मेरा साया पहचाना,
मेरी हर सिसकियों में
अपनी आँखों को भिगोया
आशिर्वाद उनका हमेशा हमने पाया
हर ख़ुशी को मेरी पहले उन्होंने जाना
असमंजस के पलों में,
अपना विश्वाश दिलाया
उनके इस विश्वास को
अपना आत्म विश्वास बनाया
ऐसे पिता के प्यार से
बड़ा कोई प्यार न पाया

रितिका देवी
शास्त्री अंतिम वर्ष

माँ

रिश्तों के तो नाम कई हैं, पर मां होना आसान नहीं है। अपना हर एक ख़्वाब भुलाकर, खुश रहना आसान नहीं है। एक एक काम है मां के ज़िम्मे, समय सारणी सख्त बड़ी है, पल पल काम में उलझे रहना, सच मानो आसान नहीं है। माना ये एहसान नहीं है, किसी पर इल्जाम नहीं है, पर अंतर्मन की अभिलाषा को भुला पाना आसान नहीं है। घर छोड़ो तो घर बिगड़ेगा, मन तोड़ो तो मन बिगड़ेगा, दोनों को समेट के चलना, ये भी तो आसान नहीं है। सबसे कठिन तो तब लगता है, जब कोई नहीं समझ पाया ये, कि कैसे मां ने पूरी की है, हर रिश्ते की जिम्मेदारी। काम कर के भी नाम ना मिलना, हक का वो सम्मान ना मिलना, हंसकर सब कुछ टालते रहना, बिलकुल भी आसान नहीं है।

सोहेल शास्त्री

सुक्षेत्र सुकेत गाथा

शुकदेव ऋषि की तपोभूमि, ये हमारे सुकेत का है सार।
बंगाल से आया सेनवंश का राजा,पहुंचा सरही धार।
रूपसेन के पुत्र वीरसेन ने, पांगणा में विजय पाई।
सुकेत रियासत के इतिहास में, पहली राजधानी कहलाई।
लक्ष्मन सेन ने आक्रमण करके, कुल्लू में जीत पाई थी।
साहू सेन के भाई ने, कुल्लू मंगलौर में रियासत बनाई थी।
1000 ई. में हुई मण्डीं की स्थापना, बाहूसेन की कहानी थी।
मदनसेन ने 1240ई. में, लोहारा को बदली राजधानी थी।
करतारसेन ने करतारपुर को अब राजधानी बनाया।
औरंगजेब ने श्यामसेन को, दिल्ली था बुलाया।
कैद श्यामसेन जब हुआ,तब स्मरण उसे मांहूनाग आया।
मुक्त हूआ कैद से श्यामसेन, मदिंर के नाम भूभाग कराया।
स्थापना हुई सुंदरनगर की,गरूड़सेन का शासन आया।
गरूड़सेन की पत्नि नें, सुरज कुंड का निर्माण कराया।
विक्रमसेन द्विवतीय ने बनेड़ को राजधानी बनाया।
1758 में जस्सा सिंह रामगढ़िया कब्जा करने आया।
रणजीत सेन ने देखा, जयसिंह के अधीन था शासन सारा।
रणजीत पुत्र विक्रमसेन ने, 'बंटवारा' में नरपत वजीर मारा।
1846 ई. में उग्रसेन ने युद्ध करके, सिख्खो पर विजय पाई।
ब्रिटिश अधीनता में अब, अंग्रेजो के हाथ रियासत थी आई।
अंतिम राजा सुकेत का, लक्ष्मण सेन कहलाया।
नवम्बर 1921 सुकेत, भारत सरकार के अधीन आया।
सुकेत की राजप्रथा अब, सरकारी स्वरूप में ढलने लगी।
सुकेत रियासत की शासनव्यवस्था, अब बदलने लगी।
फरवरी 1948 में सुकेत सत्याग्रह आंदोलन कराया।
पंडित पदम्देव ने आंदोलन से रियासतों को मिलाया।
अच्छे बुरे शासको से, हार-जीत का सिलसिला बन गया।
15 अप्रैल 1948 के दिन, मण्डीं सुकेत मिलकर जिला बन गया।।

कृष्ण चौहान
शास्त्री अंतिम वर्ष

गुरु

जीवन में जो राह दिखाए,
सही राह पर चलना सिखाए,
सत्य असत्य मे जो भेद बताए,
वही तो है गुरु कहलाए ।
गुरु है जीवन का आधार,
गुरु मे वसा है संसार,
गुरु नहीं है किसी की पूँजी,
गुरु पर है सभी का अधिकार।
संकट मे जो हंसना सिखाए,
अच्छे बुरे का ज्ञान कराए ,
जानवर इंसान मे भेद बताए,
वही तो है गुरु कहलाए।
जो धेर्यता का पाठ पढाए ,
परछाई बनकर जो साथ निभाए,
जिसे देख आदर से सर झुक जाए,
वही तो है गुरू कहलाए।

कल्पना ठाकुर
शास्त्री तृतीय वर्ष

चींटियों से मुलाक़ात

जब मैं सुबह उठा तो मेरे दोस्त मुझे स्कूल जाने के लिए बुला रहे थे। मैं रात को काफी लेट अपनी एक फेवरेट फिल्म देखकर सोया था। इसलिए सुबह लेट उठा। जब तैयार होने लगा तो मुझे मेरे जूते नहीं मिल रहे थे।

मैं उन्हें सब जगह ढूंढने लगा। घर के हर कोने, हर कमरे सब जगह उन्हें ढूंढा लेकिन वे नहीं मिले। जब मैं उन्हें ढूंढने बरामदे की तरफ गया तो मैंने देखा कि मेरे जूते चल रहे हैं। मैं यह सब देखकर बहुत हैरान था। वे आगे ही आगे बढ़ते जा रहे हैं। मैं फटाफट इन जूतों को पकड़ने के लिए जल्दी से दौड़ा। जैसे ही मैं उनके नजदीक पहुंचा तो मैंने देखा ये जूते चल नहीं रहे हैं बल्कि इन्हें खूब सारी चींटियाँ उठाकर ले जा रही थीं।

मैं उन चींटियों से अपने जूते मांगने लगा। लेकिन वे उन्हें देने से मना कर रही थीं। वे बिना रुके अब भी आगे ही बढ़ रही थीं। फिर मैंने उनसे पूछा कि तुम मेरे जूते क्यों ले जा रही हो ?

तो चीटियों ने कहा कि यही वे जूते हैं जिनसे तुमने कल हमारी दोस्तों को मारा था। हम अब इन जूतों को कहीं दूर फैंक आएँगे या फिर हम इन्हें अपने दोस्त चूहों से कुतरवा देंगी।

मैं उनसे माफी मांगता रहा। उनसे कहता रहा कि ये मेरे फेवरेट जूते हैं, तुम इन्हें मत ले जाओ। जब वे नहीं मानी तो मैं उनसे उन्हें छिनने लगा। पर चीटियां मुझे काटने को दौड़ी। मैंने उनसे एक बार फिर माफी मांगी। उनसे कहा कि मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूंगा। मैं किसी भी जीव-जंतु को नहीं मारूंगा। मुझे मेरी गलती के लिए माफ़ कर दें।

इस बार उन्होंने मेरी बात मान ली। मुझे मेरे जूते वापिस कर दिए। मुझे भी मेरी गलती का अहसास हो चुका था। वे अब जाने लगी थी। मैंने उन्हें एक मिनट रुकने के लिए कहा और फटाफट रसोई से उनके लिए चीनी लाने के लिए दौड़ा। जैसे ही मैं वापिस उनकी तरफ आ रहा था तो मुझे एकदम खूब शोर सुनाई देने लगा। इस शोर ने मुझे जगा दिया था।

मैं जब जागा तो कोई चींटियाँ-बिंटियाँ नहीं थीं। बस मेरी छोटी बहन अपने डॉगी को जोर-जोर से डांट रही थी। मुझे साफ़ समझ आ गया कि यह तो मेरा सपना ही था। मैं आज स्कूल जाने के लिए लेट हो गया था। लेकिन चाहे कुछ भी हो, इस सपने ने मुझे यह बात जरुर समझा दी थी कि कभी किसी भी जीव-जंतु को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए। उन्हें भी दुःख होता है। वे भी हमारी हरकतों से परेशान होते हैं।

अंतरिक्ष
प्राक शास्त्री-द्वितीय वर्ष

अनमोल वचन

मन मिले जिससे - रिश्ता रखो उसी से
जहां कदर नहीं - वहां जाना नहीं
जो सुनता नहीं - उसे समझाना नहीं
जो पचता नहीं - वह खाना नहीं
जो सत्य पर भी रूठे - उसे मनाना नहीं
जो नजरों से गिर जाए - उसे उठाना नहीं
जीवन में तकलीफ आए तो - घबराना नहीं
मौसम की तरह जो बदलें - उन्हें जिंदगी में लाना नहीं..

सुनीती क्षत्राणी
शास्त्री अंतिम वर्ष

अंतरिक्ष

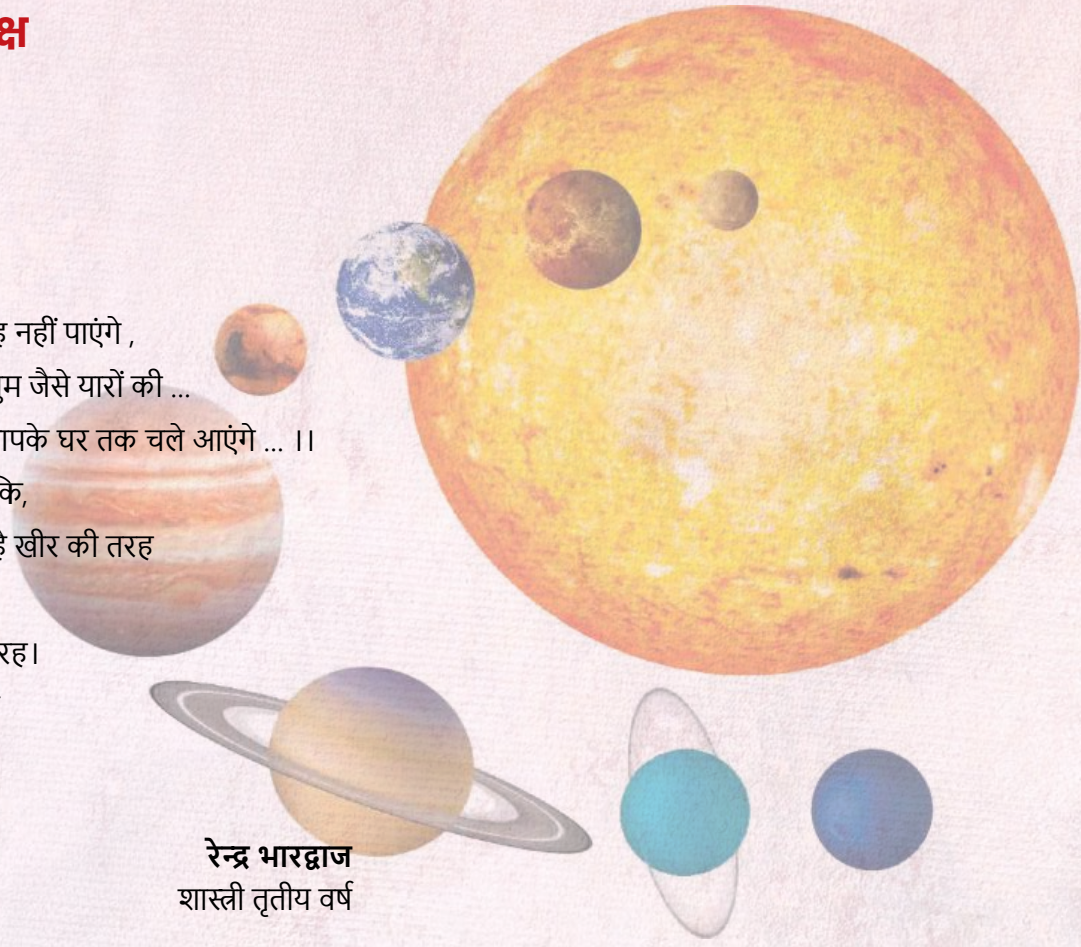

तेरा प्यार पाने के लिए
मैने कितना इंतजार किया
और उस इंतजार में मेने
कितनो से प्यार किया ।
नफ़रत न करना कभी हमसे , हम यह सह नहीं पाएंगे ,
बस एक बार कह देना की जरूरत नहीं तुम जैसे यारों की ...
आपकी कसम आपको पीटने आपके घर तक चले आएंगे ... ।।
लड़कियों से प्यार न करना क्योंकि,
दिखती है हीर की तरह, लगती है खीर की तरह
दिल में चुभती है तीर की तरह,
और छोड़ जाती है फकीर की तरह।
आपके आने से फूल गिर जाते है
चश्मा पहन के आया करे आप
क्योंकि गमले टूट जाते है।

रेन्द्र भारद्वाज
शास्त्री तृतीय वर्ष

शहीद जवान

बुझा है जिस आंगन का चिराग
उस घरों की दीवारें भी रोई थी
खोया है जिन मां ने बेटा अपना
वह मां उन दिनों कैसे सोई थी
कतरा-कतरा बहा था खून का तब
आखिर हिसाब देगा कौन अब
आखिर क्यों ना भड़के मेरे सीने में वह आग
आखिर कब तक रहेगा कोई मौन
तबाह किया जिन आतंकवादियों ने सीन
अब उनको उनकी औकात दिखानी थी
भूलना नहीं यह कर्ज देश के जवानों का
बात यह उनके घर में घुसकर सिखानी थी

रोहित शर्मा
प्राक शास्त्री-1

कुछ पल

शाम भी खास है वक्त भी खास है,
इसका तुझे भी एहसास है मुझे भी एहसास है।
और उस रब से क्या चाहिए
जब मैं तेरे साथ हूँ तू मेरे साथ है ।

***

वो गजल लिखते है और हम सुनते हैं
वो सब लिखते हैं और हम नासमझ खुद समझते है।

***

तू जो पास भी तो तेरी कद्र जरा कम थी
मेरी गलतियों का पता कैसे चलता
मुझे तुने कभी भिकायत ही नहीं की ।

***

जैसे फूलो को धागे में पिरो कर माला बनती है
वैसे ही शब्दों को एहसास में पिरो कर कविता बनती है
ठीक वैसे ही सपनो को मेहना में पिये कर कामयाबी मिलती है।

***

ये इनायते गजब की ये बला की मेहरबानी
मेरी खैरियत भी पूछी तो किसी और की जुवानी ।

***

दुनिया को लगते हैं बुरे अंदाज मेरे
लोग कहाँ जानते हैं गहरे राज मेरे ।

वो खुश हैं बिछड़ कर मुझ से
ऐ दुनिया बेवफा न कहे उसे ।

***

इस दिल में अरमान कोई रखना,
दुनिया की भीड़ में पहचान कोई रखना
अच्छे नहीं लगते जब रहते हो उदास,
इन लबों पर मुरकान वही रखना ।

***

आवारगी में हद से गुजर जाना चाहिए
लेकिन कभी कभार तो घर जाना चाहिए ।

***

घायल करके मुझे उसने पूछा करोगे
क्या मोहब्बत मुझसे,
लहु लहु था दिल मेरा,
मगर होठों ने कह बेइंतहा - बेइंतहा ।

***

इश्क में तेरा यकीन बनजाऊ,
दर्द में तेरा सुकूँ बन जाऊँ
तुम रखो कदम जहाँ खुदा करे
मैं वो जमीन बन बन जाऊँ ।

आकाश
शास्त्री द्वितीय वर्ष

माँ

अपने ही मन से न जाने कितनी कहानियां बनाती थी
माँ !!
हां माँ, वो माँ, जो भगवान है मेरी !
हां वो माँ, जिसकी छत्रछाया में मैंने हमेशा अपने आपको
महफूज पाया है !!
हां वो माँ जिसको मेरी हरदम चिंता सताती है !
मेरे थोड़े से दु:खी होने पर वो खाना नही खाती है !!
हां वो माँ जिसके होने से आज मेरा वजूद है !
हां वो माँ जिसके आचल की खुसबू घूली है !!
आज भी मेरे सांसो में !
मुझे थोड़ी सी चोट लगती है मैं माँ को ही पुकारती हूं क्योंकि ?
मेरे खून के कतरे-कतरे में माँ ही है कोई और नही !!
आई लव यू "माँ आई मिस यू माँ' ....

मोनिका यादव
शास्त्री अंतिम वर्ष

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि

बस कर्म तुम्हारा कल होगा,और कर्म अगर सच्चा है।
तो कर्म कहा निष्फल होगा,हर एक संकट का हल होगा।
वह आज नहीं तो कल होगा।
लोहा जितना तपता है, उतना ही ताकत भरता है ।
सोने को जितनी आग लगे, वह उतना प्रखर निखरता है।
हीरे पर जितनी धार लगे, वह उतना खूब चमकता है ।
मिट्टी का बर्तन जब पकता है, तब धुन पर खुब खनकता है। सूरज जैसा बनना है, तो सूरज जितना जलना होगा।
नदियों सा आदर पाना है, तो पर्वत छोड़ निकलना होगा।
और हम आदम के बेटे हैं, क्यों सोचे राह सरल होगा ।
कुछ ज्यादा वक्त लगेगा पर, संघर्ष जरुर सफल होगा।
हर संकट का हल होगा, वह आज नहीं तो कल होगा।

तिनिशा
शास्त्री प्रथम वर्ष

जीवन का लक्ष्य कर साकार

पानी हैं अगर तुझे अपनी मंजिल
तो अपना रास्ता खुद ही तलाश कर
तुमे गिराने के लिए लोग कोशिश करेगें हजार
कभी डराएंगे कभी रुलायेंगे
नहीं- थामेगा कोई हाथ तेरा
बस खुद के ही साथ की आस कर
मुश्किलें आएंगी कई बार
पर तुझे रुकना नहीं, झुकना नहीं हैं
हर इम्तेहान को हिम्मत से करना है पार
दृढ इरादे मजबूत इच्छाशक्ति के आगे
नहीं है कोई मंजिल दुश्वार
जो खुद का साथ कभी नही छोड़ता
उसका सदा साथ देता है परवरदिगार
बढ़ते चले जाना है बिना रुके लक्ष्य तक
मौका नहीं मिलेगा ऐसा हर बार इसलिए
जाने नहीं देना है जीवन को व्यर्थ इस बार

सुशील कुमार
शास्त्री द्वितीय वर्ष

जीवन की बहार

जब से देखा है मैंने तुम्हें इस कदर से, तो आई बहारे हैं जीवन में मेरे। दुआ ये करूँ उस रब से मैं हर पल, तू मेरा साथ दे मैं रहूँ साथ तेरे॥

सरोवर के तट पर खिले ब्रह्म कमल उन नीरज के जैसी ये आँखें तुम्हारी। कनक वर्ण और सूर्य-सा तेज मुख पर, है मीठे सुधा रस-सी बातें तुम्हारी।जो चढ़ती जवानी का ढलता सितम है, ये मदहोश कर 'दे "ना दिल को हमारे।

मैं कुसुम हूँ कमल का प्रभाकर हो तुम, मेरा खिलना तुम्हारे ही खिलने से होता। मैं हूँ मत्स्य चञ्चल तो तुम नीर हो,' मेरा होना तुम्हारे ही होने से होता। मेरे यार भी तुम मेरा प्यार भी तुम, अन्धेरे में रौशन तुम दीपक हो मेरे।

तुम मोती हो सागर की उस सीप के, जो समन्दर कें तल में छिपी हैं कहीं ? मोहब्बत हुई हमको उन शख़्स से, जिनका मिलना मुकद्दर में मुमकिन नहीं। ये संसार दीवार ज्यों किरणों को, ज़मीं पर ना आने दे बादल घनेरे।।

जतिन जोशी
शास्त्री द्वितीय वर्ष

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास ही सफलता की नींव है, आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्ति अपने द्वारा किये गए कार्य पर संदेह करता है। आत्मविश्वास उसी व्यक्ति के पास होता है जो स्वंय से संतुष्ट होता है एंव जिसके पास दृड़ निश्चय, मेहनत व लगन, साहस, वचनबद्धता आदि संस्कारों की सम्पति होती है।

स्वंय पर विश्वास रखें, लक्ष्य बनायें एंव उन्हें पूरा करने के लिए वचनबद्ध रहें। जब आप अपने द्वारा बनाये गए लक्ष्य को पूरा करते है तो यह आपके आत्मविश्वास को कई गुना बढ़ा देता है। खुश रहें, खुद को प्रेरित करें, असफलता से दुखी न होकर उससे सीख लें क्योंकि experience हमेशा bad experience से ही आता है।

राकेश शर्मा
शास्त्री अंतिम वर्ष

एकता की शक्ति

एक बूढ़े किसान के चार बेटे थे। वे सदैव आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान ने तंग होकर चारो बेटों को अपने पास बुलाया और उन्हें एक-एक लकड़ी दी। इसके बाद किसान ने उन्हें तोड़ने के लिए कहा और सभी लड़को ने आसानी से लकड़ी तोड़ दी।

इसके बाद किसान ने चारों लकड़ियों को बाँधा और लड़को को इन्हे तोड़ने के लिए कहा परन्तु कोई भी इसे नहीं तोड़ पाया। इस पर किसान ने समझाया की तुम लोग भी इन्ही लकड़ियों की तरह हो।

अगर तुम एकता से रहोगे तो मजबूत रहोगे परन्तु अकेले होने पर तुम इन लकड़ियों की तरह कमजोर हो। इस प्रकार लड़के अपने पिता की बात समझ गए।

कहानी की सीख - एकता में ही शक्ति है।

मानस शर्मा
प्राक-2

लड़की हो तुम . . .... जाने दो
(शिक्षा से शादी तक)

पेंसिल कॉपी, बस्ता और किताबें लाऊँगी
जल्दी से तैयार करो माँ, मैं भी पढ़ने जाऊँगी।
नहीं कलेक्टर बनना, तुमको, घर संसार बसाना है,
हिन्दी, इंग्लिश, गणित, तुम्हारा, सब चूल्हे में जाना है।
पढ लिख कर मां बनुगी अफसर, स्कूल जरा, तुम जाने दो,
चाचा, मामा, ताऊ बोले, लड़की हो तुम जाने दो ।
कि लगी कतारें घर के आँगन में,
पंडित गुणगान करें,
चाह किसी की मोटर गाड़ी, कोई नगद की मांग करे।
साँवली है बेटी कुछ, फिर भी बात बनाएँगे,
बेटा है सरकारी उनका, ऐसा वर क्या पाएँगें।
शादी मेरी है मुझको वर मेरा पसंद तो आने दो,
बड़ों का कहना मानो बेटी, लड़की हो तुम जाने दो।
साहस, शौर्य, अदव मे ना, पूछो अग्नि की तरुणाई में,
गोरों को भी धूल चटाने वाली, लक्ष्मी बाई मैं।
बन कर साक्षी जानू, मेरी कौम वतन पे आई हूँ, गई
ओलंपिक, एवरेस्ट, क्या चांद भी छूकर आई हूँ।
और बनूं मिताली राज मुझे झण्डा फहराने दो,
छक्के पर छक्का मारूंगी जर बल्ला तो घूमाने दो।
कभी नहीं अब कहना मुझसे,
लड़की हो तुम जाने दो।

शिवानी
शास्त्री प्रथम वर्ष

पर्यावरण

इंसान की देखो कैसी माया,
पर्यावरण को खूब सताया।
देश को आगे ले जाने,
पेड़ काट उन्हें खूब रुलाया।
देश में अनेक कारखाने खुलवाये,
पर नदियों में गंदे जल बहाये।
देखो प्रकृति कैसे असंतुलित हुई,
ठंडी में गर्मी और गर्मी में बारिश हुई।
हुआ बादलों में धुओं का बसेरा,
पता नहीं अब कब होगा शुद्ध सवेरा।
जंगल नष्ट करें जानवरों को बेघर कर दिया,
अपने स्वार्थ में पर्यावरण नष्ट कर दिया।
पेड़ काटने एक आदमी आया,
धूप है कहकर उसी के छांव में बैठ गया।
पेड़ बचाओ कहते हम थकते नहीं,
और एक इंसान को पेड़ काटने से रोकने नहीं।
बातों पर अमल कर,
प्रदूषण को दूर भगाएं।
चलो शुद्ध और,
स्वस्थ पर्यावरण बनाएं।

सीमा ठाकुर
शास्त्री तृतीय वर्ष

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियां साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नए-नए रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके घर नहीं है बेटी।

प्रिया
शास्त्री प्रथम वर्ष

आंङ्लविभागस्य सम्पादकः

Editor of English Department

प्रो. ममता शर्मा

Editorial

Dear Students,

"You are never given a wish without also being given the power to make it true. You may have to work for it, however." This is a very apt statement by Richard Bach. Hard work can alone lead you to success. Each one of you has a special role to play in the world. This can be achieved with strong determination and dedicated approach towards a well defined goal. In today's world of varied exposure to the multifaceted life it is easy to get waylaid and only those can survive who shall follow the right goal through right means.

Wish you all success.
Mamta Sharma

Culture of Himachal Pradesh

The state of Himachal Pradesh is a state that has remained largely uninfluenced by Western culture. Himachal Pradesh is a multi-religion practising, multicultural and multilingual state. Some of the most commonly spoken languages are Hindi and the various Pahari languages.The Hindu communities residing in Himachal include theBrahmins, Rajputs, Kannets, Rathis and Kolis. There are also tribal population in the state which mainly comprise Gaddis, Kinnarms, Gujjars, Pangawals and Lahaulis.

Himachal is well known for its handicrafts. The carpets, leather works, shawls, paintings, metalware and woodwork are worth appreciating. Pashmina shawl is one of the products which is highly in demand not only in Himachal but all over the country. Himachali caps are also famous artwork of its people.

Local music and dance reflects the cultural identity of the state. Through their dance and music, they praise their gods during local festivals and other special occasions.

There are a number of fairs and festivals celebrated in Himachal Pradesh, including the temple fairs in nearly every region that are of great significance to this state.

The day-to-day food of Himachalis is very similar to the rest of the north India. They too have lentil, broth, rice, vegetables and bread, etc. As compared to other states in north India, non-vegetarian cuisine is more preferred. Some of the specialities of Himachal include Manee, Madeera, Pateer,Chouck, Bhagjery and chutney of til.

The Annual Festival of Kasol known as Himachal Hills Festival which take place from 27 to 30 December every year in kasol.

People and Culture :

Around 96% of the population of the state is of Hindus. The major communities include Brahmins, Rajputs, Choudharies, Kannets, Rathis and Kolis. The tribal population comprises the Gaddis, Kinnars, Jadun, Tanolis. Gujjars, Pangawals and Lahaulis. From the alpine pasture regions to the lower regions during the cold winter season are mainly Hindus. The Kinnars are the inhabitants of Kinnaur and they generally practice polyandry and polygamy. The Gujjars are nomadic people who rear buffalo herds and are mainly Muslim. The LahaulisofLahaul and Spiti and

native of spiti, Kinnaur region mainly comprises Buddhists.A percentage of people are also Tibetans. Muslim, Christian and Sikhs.

Though Hindi is the state language, many people speak the various Western Pahari languages. A majority of the population is engaged in agricultural practices, however the more educated of them are now moving towards tertiary sectors. As per the traditional dressing norms the dress of the Brahmin male includes dhoti, kurta, coat, waistcoat, turban and a hand towel while that of the Rajput male consists of tight fitting churidar pyjamas, a long coat and a starched turban. With the changing time the dress up of the people has now become a mixed one. Though the above-mentioned style is now hardly followed, people have started wearing western style of clothes.

The typical house is constructed of claybricks and the roofs are of slate. In some areas the slate roof is also replaced by timber.

Arts & Craft :

The handicraft that comes out of this state are the carpets, leather works, shawls, metalware, woodwork and paintings. Pashmina shawl is the pretty product which is in high demand not only in Himachal but all over the country. Colourful Himachali caps are also famous art work of the people. A tribe namely Dom is expert in manufacturing bamboo items like boxes, sofas, chairs, baskets and rack. Metalware of the state include utensils, ritualistic vessels, idols, goldand silver jewelleries.

Weaving, carving, painting, and chiselling are considered to be the part of the life ofHimachalis. Himachal is well known for designing shawls especially in Kullu. The architecture, objects, shops, museums, galleries and craftsmen charm with the variety perfected through time.

Women take an active part in pottery and men in carpentry. For ages, wood is used in Himachal in the construction of homes, idols etc.

Music & Dance :

Music and dance of Himachal Pradesh reflects its cultural identity. Through their dance and music, they entreat their gods during local festivals and other special occasions. There are also dances that are specific to certain regions of the state.

Some of the dance forms of Himachal areLosar Shona Chuksam (Kinnaur), Dangi (Chamba), Gee Dance and Burah dance, (Sirmour), Naati, Kharait, Ujagjama and Chadhgebrikar (Kullu) and Shunto (Lahaul &Spiti). The main dance form of Himachal Pradesh is nati. People of the state generally prefer folk music. There is no classical form of music, as for the Himachal Pradesh is concerned. Himachali dance forms are highly varied and quite complicated. These dances are a very vital part of the tribal life. It reflects the culture and the tradition of Himachal Pradesh. Hardly any festivity here is celebrated without dancing. Some of the dance forms like Dulshol, Dharveshi, Drodi, Dev Naritya, Rakshas Nritya, Dangi, Lasa, Natiand Nagas are danced all over the region.

Fairs & Festivals :

Apart from the fairs and festivals that are celebrated all over India, there are number of other fairs and festivals also that are at the high point of Himachal Pradesh. These festivals are the time for the Himachalis to adorn colourful dress and accessories and get mixed up with the rest of their kins. Some of these fairs and festivals in the upper regions are the Kullu Dussehra, Shivratri Fair (Mandi), Shoolini Mela (Solan), MinjarFair(Chamba), Mani Mahesh Chhari Yatra (Chamba), Renuka fair (Sirmaur), Lavi Trade Fair (Rampur), Vrajeshwari fair (Kangra), Jwalamukhi Fair (Jwalamukhi), Holi Fair (Sujanpur Tira), and Naina Devi Fair (Bilaspur), Fulaich {Kinnaur valley}. In the lower regions of Himachal are temple Fairs in Una District such as the Peeplo Fair, the BharoliBhagaur Fair, the 'Mairi' Guruduwara Fair, the 'Chintpurni' temple Fair, the 'Kamakhya temple' Fair, including the annual Himachal Hill Festival in the village Polian Purohitan during the fourth week of October. The centuries-old Sair festival is celebrated mainly in Shimla, Kangra, Mandi, Kullu andSolan districts every year in mid-September. It is celebrated to mark the end of the crop harvest and also the rakhi thread are removed and offered to the mother sairi.

Food :

The day-to-day food of Himachalis is very similar to the rest of north India. They too have lentil, broth, rice, vegetables and bread, Rajmaha, Sidhu. As compared to other states in north India non-vegetarian cuisine is preferred. Traditionally, Himachali cuisine is dominated by red meat and wheat bread. Thick and rich gravy, with aromatic spices, is used in abundance as the base of many dishes. Dham is the traditional food served in marriages or other functions. Siddu, Patrode,Cheele,Tudkiya Bhath and Babru are the authentic snack dishes of the state. Now, steamed momos (dumplings) and noodles are also readily available and popular with travellers who want to graduate to Indian food slowly. Some of the specialities of Himachal include Manee, Mandra or "Madra", "Palda", "Redu" Patrode, Chouck, Bhagjery and chutneyoftil (sesame seeds).

Bhagat Ram
Shastri, IIIrd Year

Take It Easy, Exams Are Not End of Life

Sometimes we are stressed out about our exams. stress is not only psychological, it manifests as various physical symptoms like headache, muscle pain, stomach upset and sleep problems. It is very important to recognise these symptoms and manage the stress ; otherwise it will wreck your system in the long run.

Before the examination :

- Plan ahead **:** We have a year to study the prescribed course. Make a rough study plan at the beginning of the year. Do not wait for the exams to start creamming.
- Making a revision schedule : Strict schedules can reply be followed, so , make a fairly schedule before the examination to revise the course.
- Healthy Competition : Competing with our peers might motivate us some times. But we must not compare our marks with that of others and berate ourself. Instead, work towards fulfilling our own expectations.
- Solve self-tests : When we are anxious about our performance, try solving self tests. This way, we will know which topics we are through with and which need more revision.
- Improve concentrations : We should try these simple exercises to improve our conversation.
- How to study :
- Revision schedule : For best recollection revise every section on day 1, 2, 7, 15 and 30. Maintain a schedule.
- Take breaks : Studing constantly for long period will not help you in retaining information. instead study for 40-45 minutes then take a 5-10 minutes break.
- Avoid confusion : Do not study too many new topics in a day.
- Use mnemonics : Flow - charts and graphics help in remembering things.
- General Well Being :
- Sleep well : Do not stay up late. It's a myth that having coffee and studing late will help. If we do not get 7 to 9 hours sleep, our brain will be too tired to help you write exam better.
- Go out and play : Step out for a stroll or to play with your friends. This will refresh us and help us to study better.
- De - clutter our table : Bed is for sleeping and a table for stubling. Make sure you are sitting at a table while Studing keep laptops, mobile phones away.
- Be confident : On the day of your examination, be confident about what we have learnt and don't discuss the subject with your friends. Last minute revision too I not helpful.
- Talk : If we feel anxious or scared during the exam, do not keep the feeling to ourself. Talk to our parents, teachers or friends.
- Not the end of the world. If we not perform will or get the marks we desired, remember, it is not the end of the world. We will always get opportunities.

It is rightly said that, "Luck is for the lazy
Success is for those who work hard".

Deepika
Shastri IIIrd year

Beautiful Thoughts

We must try to forget things that hurt us.
But we must never forget the lessons they taught us.
Beauty is not in the face; beauty is in the heart.
Life is like a butterfly.
You can chase it or you can let it come to you.
Life is short, time is fast,
No replay, no remind. So enjoy,
Every moment as it comes.

Ishima
Prak Shastri-II

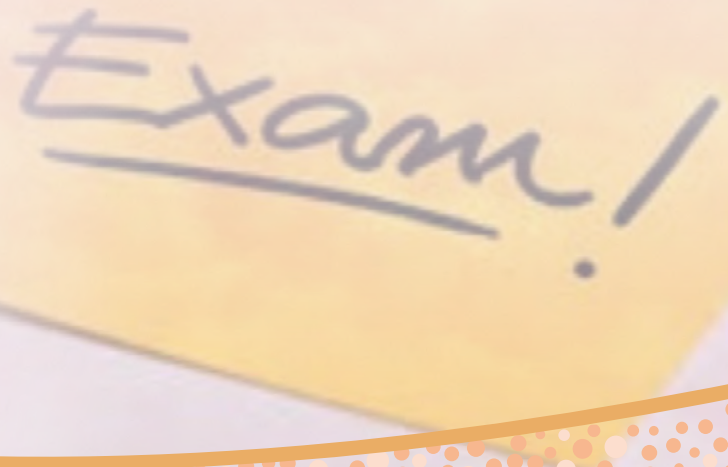

Importance Of Sanskrit

Sanskrit is the most ancient and perfect among the great language of the world. This language is a true symbol of the great India tradition and thought. This unique language contain not only good account of wisdom for the people of this country, but it is also an unparallel and right way to acquire proper knowledge and it is thus significant for the people of entire world .

In India Sanskrit is known as Dev bhasaa i.e language of the Gods . Beside it is also recognized as the mother of Indian languages. However, it is not merely a classical language, but also a repository of a great part of our old culture heritage. It is obvious to say that Sanskrit literature contains all sorts of vidyas, i e. Sciences or knowledge.

The Vedas are the soul of Indian culture and tradition. It is the store house of wisdom which is very useful to maintain a healthy and tension free life in the society.

Kajal Sharma
Shastri Third Year

Love Brother

A brother is cars and trucks,
Some would say he is a roughneck.
A brother is snakes and bugs,
But one who always gives a hug.
A brother is a big tease,
But also likes to please.
A brother is a best friend,
And will stand by you until the end.
You, my brother, are one of a kind,
You are the best, that I remind!
Love you always, no matter what,
I send you this message from my heart.

Suniti Thakur
Shastri IIIrd year

Identify yourself

Man is considered to be the most prudent in the world.

At present, every person wants to study other's personality more than his own personality. With time, man is losing his discretion. In every field, educational, religious, political, he is engaged in competition by comparing himself with others.

The education system of the present time is completely different from the education system of the ancient times. In ancient times, where the main objective of the student was to gain knowledge, today's student sees student life as a competition.

Man is forgetting himself because of such incidents. Therefore, man should introspect. You should recognize yourself.

We should stop our all activities a few moments and have quite introspection. It will help us to restart our activities in a better and purposeful manner.

Preeti
Shastri IInd year

Who am I ?

People call me by different names - some call me an introvert, others call me sweet, yet others call me short-tempered while some say that I am full of attitude. Well, people have the habit of tagging others. They are quick to judge and label others. I believe that it is wrong to label anyone. We are humans experiencing numerous emotions during the day. I also have experienced a mix of different emotions every day. It would be wrong to call me by any of the aforementioned names. Moreover, I dream of living independently in terms of financially and emotionally in the future.

I am a chill person who loves enjoying life. I do not like to interfere in the lives of my relatives, neighbours, or others around me and expect the same from them. I want them to mind their own business rather than poking their noses in my tasks. People often mistake this bracing nature of mine as being arrogant and rude. They feel that I have an attitude problem and think of myself as superior to them. However, this is not true. Though I don't want people to poke or bother me, I am always ready to help. I don't hesitate to go out of my way to lend a helping hand to people if they genuinely need it.

I am self-disciplined. I wake up each morning and prepare a to-do list. I want the tasks done in the same sequence and within the time frame, I have set for myself, and do my best to accomplish the same. Not being able to accomplish these tasks on time can leave me dissatisfied and make me frustrated. I have always been a topper in my class and want to continue the trend even as I take on higher challenges in life. I read many books other than my textbooks. Reading horror and detective storybooks is what I like which helps me to relieve stress.

In conclusion, my friends often call me a unique combination of a brace, carefree, and disciplined. I am blessed to have a supportive Family and Friends, and my all teachers.

Shalini
Shastri 3rd Year

Story Of Success

We run to achieve success,
For money, fortune & eminence,
They may be of importance,
But at last, we seek happiness.
Its meaning varies widely,
To meet goals, we spend years,
Even when failures come to us,
We work hard consistently.
Learning & struggle, our companions,
Endless sacrifices we make for years,
Facing many challenges we progress,
Until we become the champions.

Saniya
Prak Shastri IInd Year

Life

Life plays out in ripples
From all we do and say.
Each of us has an impact
Just living day to day.
Though the way that we are
Is all we can control,
We are drops in an ocean
That we should consider our whole.
Positivity and it's opposite
Are so easily spread
Through variables actions
And words that are said.
Bring out other's sunshine
And help defuse their tension
Make words spoken about you
Have nothing bad to mention.
Find the joy in life
Through the little things you do
And remind yourself daily
That you are lucky to be you!
So be a beacon of light
That cuts through the dark.
Let your ripples be live
So only good can take spark.

Meenakshi Sharma
Shastri IIIrd year

Don't Quit

When things go wrong as the some time will,
When the road you're trudging seems all up hill, when the funds are low and debts are high,
And you want to smile but you have to sigh,
When care is pressing you down a bit,
Rest if you must but don't you quit.
Life is strange with its twist and turns,
As everyone of us some time learns,
And many failure comes about,
When he might have won had he stuck it out;
Don't give up throw the pace seems slow,
You may succeed with another blow.
Success is failure turned inside out,
The silver tint of the clouds of doubt,
And you never can tell just how close you are,
It may be near when it seems so far;
So stick to the fight when you're hardest hit,
It's when things seem
Worst that you must not quit.
All the end I would say;
For all the sad words of tongue or pan,
Are not as much saddest,
As Selfishness of people are,
Enjoy the little things in life.....
For one day you'll look back and realize,
They were the big things.❣

Kiran Thakur
Shastri IIIrd year

My Mamma

My mamma is a women like no other.
She gave me life, nurtured me, taught me, dressed me, fought for me, held me, shouted at me, kissed me, but most importantly she loved me unconditionally. There are not enough words to describe just how important my mamma is to me and what a powerful influence she continues to be.
I love you mamma.
Forever

Poonam
Shastri IIIrd year

Terrorism

Terrorism is a blunder committed by the terrible individual around us to demonstrate their strength a group of people attempts to verb government or specific arena terrorism has a negative impact impact on both society and personal life as a result of their acts a large number of family are destroyed regrettaly the number of crimes in India increasing on a daily basis.

Terrorism represents the foolish act done by the people around us the ones of groups tries to roll the certain arena to show their power terrorism had adverse effect on the society as well as personal life in India it's said to say what is the number of crime in increasing day by day ancient India was in monastery where ruling was a pride to the king who could forget the date 26 November better known as where to terrorist enter the country and attacked the economic city in India bringing grenades pistols automatic refers and other weapons destroy the city and shocked the India in midnight the origin of terrorism the invitations or manufacture of worst quantities of machine guns, atomic bombs ,hydrogen bombs ,nuclear weapon.

Nainsi
Prak shastri IInd year

Art & Beauty

"Art and beauty have the unsuspected force of triggering mental power that gives people courage and confidence to steam ahead. Art and beauty bring to life unfulfilled hope, creative imagination, and bountiful goodwill".

Dimpal
Prak Shastri IInd Year

A Sacred & Real Secret Of Oúr Life

Some say that life is just an empty dream. But it is not true. Because, Life is real and it has a purpose. Only eat, drink and enjoy is not the pleasures of life. Life is action. The real purpose of life is to make ourselves better and better each passing day. There is a lot to learn and achieve in life. But life is short and time is fleeting. So, never put off till tomorrow what we can do today. And, without wasting a moment we should rise and work hard to make our tomorrow better.

Namrta Uppal
Shastri IInd year

पहाड़ीविभागस्य सम्पादकः

Editor of Pahari Department

आ. अक्षय कुमारः

सम्पादकीय

राजकीय संस्कृत महाविद्यालय री वार्षिक पत्रिका रे पहाड़ी विभागा रे सम्पादका रा गौरव मिंजो मिलेया। मेरे कठे ये बड़ी खुशी री गल हयी। इतने बड़े ज्ञाना री पवित्र संस्थाना रे कन्ने हिमाचला रे बड़े पुराने कालेजा री पत्रिका छपया करां ई। एह महाविद्यालय हरेक क्षेत्रा मंझा कई बहुमुखी प्रतिभा जा उभारने रा काम करेया करां। इन्हे प्रतिभाएं आसा रे समाजा जो कामयाबी रे नवें-नवें शिखर दिते मिंजो आशा ही नी बल्कि जानी ते पूरा विश्वास हया कि यह महाविद्यालय एसी तरीक कने कामयाबी री मंजिला जो चूमदां रहेगा। कने समाजा रे विकास मंझा अपना योगदान देदें हुए भविष्य री महान प्रतिभाएं समाजा जो देंदा रेंहेगा।

संचार माध्यम रे तीन मुख्य का हुहाये -शिक्षित करना, सूचना देणा, हो मंनोरजन करणा। प्रिटं मीडिया रा खरा उदाहरण आसारी शिलामञ्जरी पत्रिका हयी। एसा पत्रिका मंझ आपणे लेख छपाणा बड़े भारी गौरवा री गल्ल हयी। पत्र-पत्रिका छपाणा रा क्या महत्त्वा हया मैं तुंसा जो दसदा। आपणिया गलां जो लोका तक खरे तरीके ने पुंजाणे जो पत्रकारिता रा बड़ा महत्त्व है। लोकां दे दुख दर्द कने मुश्किलां जो ठीक-ठीक व्यां करना पत्रकारिता दा मकसद तां है कि ऐना समस्या जो सरकारां दे काने पाणा भी है। दर असल पत्रकार इक चौकीदार है जेड़ा असां सारेया जो चौकन्ना रखदा।

पत्रकार सारियां गलां दा नाप-तोल करदा कने तेना जो लोका तक ठीक रूप देई कने रखदा। पत्रकारिता कने समाज बिच सही तस्वीर नजर औंदी। लेखां कने खबरा भी पत्रकारिता रा मकसद हया। दरअसल पत्रकार जीयोन्दा जागदा माहणूं है जो आसा जो चौकन्ना रखेंदा।

आचार्य अक्षय कुमार शर्मा
व्याकरण विभाग
रा. सं. महा. सुन्दर नगर

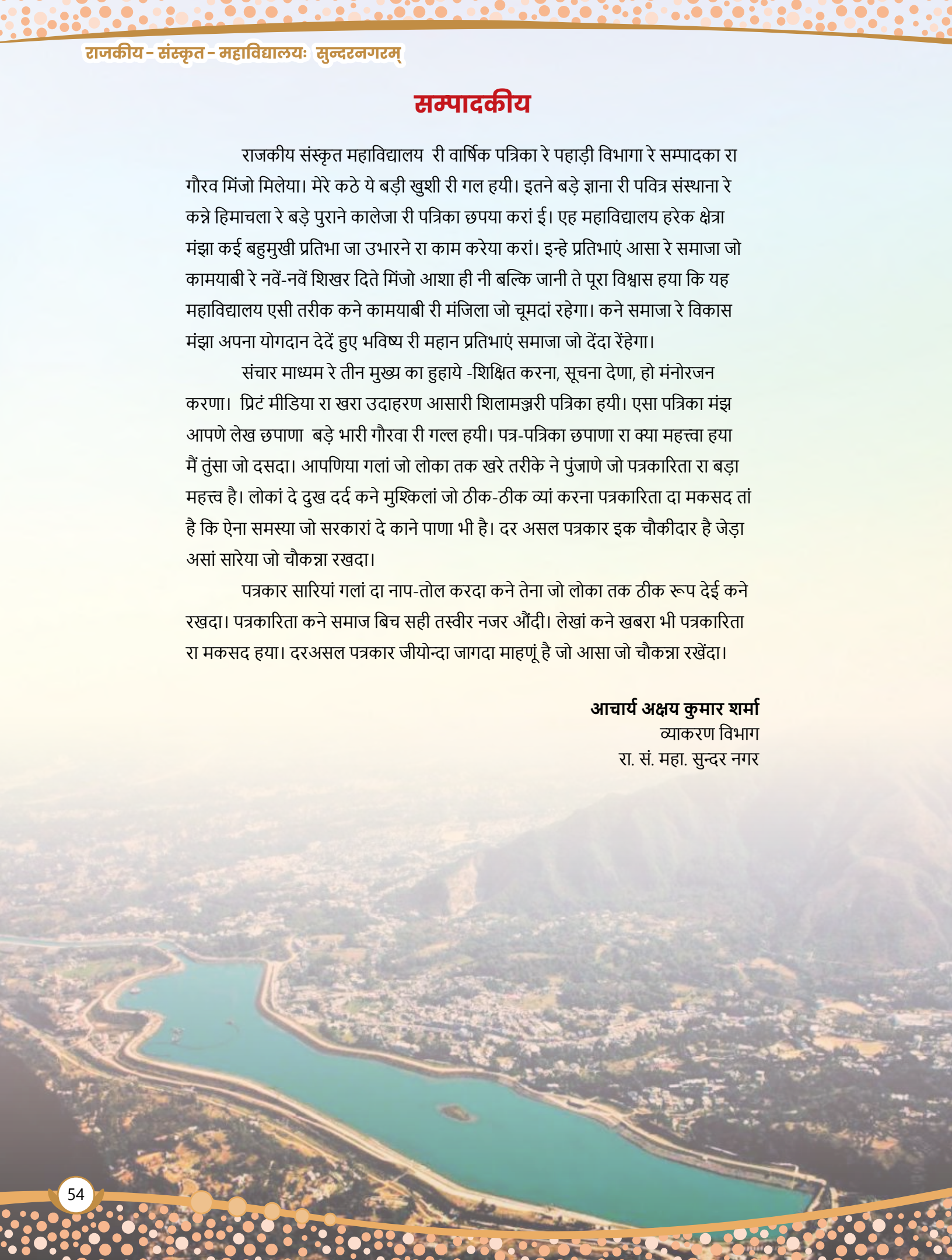

एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी

एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी
एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी
तौऊंद भी हेरी हिऊंद भी हेरी
ऐसा बारी मालका नोखी गल केरी
एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी।
कैंडी आई बादली चूटे सारे पुल,
ढुली सारी सड़का,जगह जगह फूटे बादल
घर ढूली रे बोहू,
खून पसीने री कमाई यारो,
शुकदा लागा लोहू।
देखें मालका हूणे देंदा फेरी
देखें मालका हूणे देंदा फेरी
एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी।
जेतरा केरू विकास तेई पांदे लागा रोक
जेतरा केरू विकास तेई पांदे लागा रोक,
बिजली पाणी नेटवर्क, सव हुए लोप,
गड्डीयां चकी खेलणू साही, डाल बूटे री लाई ढेरी
गड्डीयां चकी खेलणू साही, डाल बूटे री लाई ढेरी,
एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी।
ऐ किवे होऊ एड़ा, ऐता पीछे भी सा यारो तर्क
ऐ किवे होऊ एड़ा, ऐता पीछे भी सा यारो तर्क,
जादा विकास केरणा भी होआ कदी आपूवे बेड़ा गर्क।
गड्डियां पूजी हर घरे हर घरे लागा नलका
गड्डियां पूजी हर घरे हर घरे लागा नलका
पर कदर नी रही गाय बैला री पजेणे लाए सड़का,
ओछी खोला ऐभे भी, होई नी आजी देरी
ओछी खोला ऐभे भी, होई नी आजी देरी
एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी।
देव स्थल वणू पर्यटक स्थल, इह ता गलती होई
देव स्थल वणू पर्यटक स्थल, इह ता गलती होई
भीड़ था बढ़ी मंदरे बढ़ी पर सच्चे मने नई एजदा कोई
मै कै दसणा तूमहा वे यारो, ए औकात ना थी मेरी
मै कै दसणा तूमहा वे यारो, ए औकात ना थी मेरी
एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी,
एड़ी बरसात यारो पैहली बार हेरी।

भगत राम
शास्त्री तृतीय वर्ष

पहाड़ा रा जीणा

तूसां दा शहर असां छड़ी के आई गए,
आज बी असां जो बड़ी याद आंऊदी,
पहले पहाड़ा च बड़ी ठंड हुआं थीं,
हूण एथी बी चटकदी धूप पांउदी।
पहले एथि घणे घणे जंगल हुआं थे,
पेड़ कटी के लोके बंजर कीतीयां जमीना
बर्फा री चादर अंगना च आऊंदी थीं,
हूण पौष लगां लगा जेडा ज्येष्ठा रा महीना।
पहिले बड़े परिवार मिली जुली कने रहें थें,
हूण करदे सब बखरा बसेरा,
भटके राही जो कोई राह नहीं दस्दे,
उलझी रा जीवण सभीणी रा घनेरा।
पैदल अमां सौगी नानू रे घरा जा थें,
हूण गडिया मोटरा री होई गई भरमार,
आना -जाना रिश्तेदारियां कम होईगा,
फोना च पूछ दे आज सारे समाचार।
ऊना रे कोटा रा था बड़ा रिवाज,
ताई पालदे थे भेड़ा कने खाडू,
दूरा ते बेटियां आऊंदी थी घरा पेउकी रे,
मिल्दे थे सारे साडू ते साडू।
पुराणी फसला, पुराणी गला, पुराणे माणु खरा था, पुराणा रिवाज़,
आज कोई एथा जो अंदा, कोई उथा जो जहां,
अपनी डफली कने अपना राग ।
धन्यवाद
तुसां रीआपणी

सुनीती
शास्त्री अंतिम वर्ष

बुद्धु होर तीसरे नावां री परेशानी

इक सीधा-साधा पहाड़ी था। तीसरा नाम था बुद्। सारे तिसजो छेड़दे रंहदे थे कि भई बुद् भी कोई नाम आ। तु कुछ होर ढंगा रा जे नाम रख। बुद् तिन्हा रे ताणया गे परेशान होई गया। एक दिन सै चली पेया ढंगा रे नओं री तलाशा पर। पहले तिसजो इक मुर्द यात्रा मिली गयी। तिन्ने पुछया कुण मरी गया। लोके बोल्या-भई मरने वाले रा नाम था "अमरचंद"। सै आगे चलदा रेया। अग्गे तिसजो इक झाडु देंदी जनानी मिली। तिन्ने नाम पुछया ता तिस्से बोल्या,"लक्ष्मी"। सै होरआगे गेया ता तिसजो इक भिखारी मिल्या। तिसरा नाम था, "धनपत राय"। अब बुद् जो आपणा जबाब मिली गेया।

हुण कोई तिसजो नावां रा ताणा देंदा ता सै जबाब देंदा-

अमर चंद सै मरी गेया,
झाडु मारे लक्ष्मी,
धनपतराय लगीरा मंगणा भीख,
मेरा नां भाईओ बुद् ए ठीक।

शर्मिला देवी
प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष

बचपन

सबसे प्यारा क्या है-बचपन
निडर बेखौफ है ये बचपन
सबसे कीमती है ये बचपन
बीत जाता है ये बचपन
याद आता है ये बचपन
मां की गोद में खो जाता है ये बचपन,
पिता के कंधो पर झूल जाता है ये बचपन,
चांद सितारों मे खोया रहता है बचपन,
कहां खो जाता है ये बचपन
क्यों याद आता है ये बचपन।

पूनम कुमारी
शास्त्री अंतिम वर्ष

आज काला रे युवा

देशा री शान, देशा री पच्छाण,
क्या करिये आजकाला रे युवा,
आपणे किरदारा ते अन्जाण।
बोलदे छूणा आसमान, ऊंची इना रि उड़ान।
एक कप चाह बनाणे जो टूटदा सारा आसमान।
एहसास नियां जिम्मेदारियां रा,
आपणे ही घरा रेंदे, जे आई जाओ कोई मेहमान,
वाहरो निकलने औ निकलदे इना रे प्राण।
मोबाइल अटकीरि जान,
पेहले वक्त गुजरां था खेला रे मैदाना,
अब हुये हाथा च इना री जान।
क्या करिये आजकाला रे युवा,
आपणे किरदारा ते अन्जाण।
आनलाइन दुनिया च भले कमाईलो हजारो दोस्त,
कैसी नी आना कामा।
जैवे वजणि ठोकर, ता याद आणे अपणे मां-बाबा।
वादों नी पच्छताणा ता खोलो इना किताबा,
ता ही वदलणा काला रा भविष्य,
जे करेगे आज मेहनत,
ता ही वदलणा काला रा दृश्य।

पल्लवी डोगरा
प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष

मंडयाली संस्कार

वाझी लुणे स्वाद नीं हा, चाहे खाई के देखो।
वाझी बुलाए आदर नीं हये, चाहे जाई के देखो।।
मना मंझ हा कपट, ता मंदरा जाई के देखो।
मना रा मैल नी धोहणा, चाहे गंगा नाही के देखो।।
बडेया रा करणा आदर होर बचेया के प्यार बंडाई के देखो।
कौड़ा बोली के हुंई लडाईया, मीठा मीठा ग्लाई के देखो।।
अनपढा़ होर वेहलेया री नी कदर, चार म्हाणुआ मंझ जाई के देखो।
जे आपणे छोहरू साहब बनाणे, ता स्कूला पढ़ाई के देखो।।
घरा करनी सीख सलाह,स्याणेया रा ग्लाईरा भी मनी के देखो।
केसी भी गला रा नी हुणा घाटा, जे भी हा आजमाई के देखो।।
पाणी मंझा मधाणी नी घुमाणी, मक्खन लाई के देखो।
दहियां ते ही निकलांह मक्खन, जे कोई लाई के देखो।।
खण्ड खण्ड बोली मुहं मीठ्ठा नी हुणा, कोई रट्टी के देखो।
गुरु ते ही मिलणा ज्ञान, चाहे केथी भी जाई के देखो।।
नशेया ते रेहणा दूर, खरेया री संगती जाई के देखो।
हंकारा ते रैहणा दूर, ज्ञान बरसाई के देखो।।

????
????

हासणां नी आ ठीक आ

एक बारी री गल्ल ई, एक आदमी हुआं, तेसजो न्हेरा हुदे ही घट सुजणा लगी जां। एक बारी से आपणे कुडमा रे घरो जां। बड़ी भारी गप्पा-सप्पा मारायें थोड़ी देर बाद न्हेरा हुई जां। ता तेस आदमी जो घट सूजणा लगी जां। रात हुई जांई, कुड़मानी रोटी सब्जी बणाई कन्ने बोल्ही, चल्ला कुडम जी रोटी खाई लो। फिर तेसजो रसोइया जो लई जाहें। तीन्हे लकड़ियां रि कुणियां च म्हैसीया रा बच्चा बानी रा हुआं। सेले रे ध्याडे थे,कुडम भी तेसा कुणीयां बैठी गया। कुडमणियें तेस जो दाल रोटी दिती। तेवे ही म्हैसीया रे बच्चे गोबरी दिता।कुडमे सोचया कुडमणियें आज भुज्जु पकाईरा। तीने आदमीये रजी कने रोटी खाई ली, फेरी बोलां कुडमणियें भुज्जु ता,तुमसे बड़ा स्वाद बनाई रा था, पर लुण पाणा भुली गई रे थे।

मोनिका डोगरा
प्राक शास्त्री प्रथम वर्ष

बेड़ेए झ़रोखे बिरहन हेरदी,

ज़ोतै झ़लकारै लाऐ।
आधड़ी राची अम्बुआ री डाड़िऐ,
ढीलै बैणा कोयल गाए।।
बिरहन : काखलाड़िऐ सुरा री डाड़िऐ,
गला दे मेरी भुझ़ाए।
पिया वियोग में दाउई गेई,
कोई बिध बिसरा ना जाए।।
कोयल: सोठ पिया री मन को भक्षे,
मृग को जैसे बणराई।
ज़ाणै रे प्रेम री झ़ूठी माया,
बिरह ही सत सच्चाई।।
बिरहन: कियां चलूं इह प्रेम री बातिया,
ज दरद कड़ेज़ै लाए।
पिया तूरण मौनै दाह पड़ी,
रो-रो के नैण गुवाए।।
कोयल: दुई धारी खण्डा प्रेम डगर ,
प्रेमी हिय पीड़ ना पाए।
पिया ब्रह्म हिरदय दईबसदऐ,
सै दूर किदाका आऐ।।
बिरहन: डोरी ज़ै हिय री बालुई गेई,
फोइया ना जै चूटी जाए।
तीछी कटार ज़ै लागे तज़ की,
नैण सिपु भर जाए।।
कोयल: ज़ै सत प्रेम भरा हिय में,
रस डूबे ज़िंद कट जाए।
एक ही संगी एक ही साथी,
ऐबी जग चे़तै ना लाए।

जतिन जोशी
शास्त्री द्वितीय वर्ष

फाइनल ईयरा री पढ़ाई....

दिसंबर गया आई,
मास्टरे पूछेया केहड़ी लगीरी तुसा री पढ़ाई।
छोहरू भी लगीरे दुखड़े रौंदे,
कोई ता बोलां ठीक ठाक ही,
कोई बोलां आसे दीती साल ग्वाई।।
क्लासा हुएं थे सुतीरे, नींदर जाईं थी आई।
घरा आऊले उठाएं थे पढ़दे,तेबे ढकी लें थे रजाई।।
एभे नी आऊंदा कुछ भी,साल दीती ग्वाई।
मास्टर बोलाएं थे तेबे नी किती सुणाई,
एबे बोलें भोलेनाथ पास देया कराई।।
जेबे पेपर देई के निकलें,
तेबे केसीरी हाखिया हुंई भरिरी ता केसीरे मुंहा पर हूंई चमक छाई।
मेरी गल्ला सुणी के तुसो भी गई हूंगी अक्ल आई,
ता अगले पेपरा कट्ठे करी लेया खूब पढ़ाई।।

शालिनी
शास्त्री अंतिम वर्ष

आसारी बोली पहाडी री पुकार

एड़ी क्या गुस्ताखी, क्या किती मैं बुराई।
पढदे-लिखदे ता थे नी, बोलने गलाने ते भी गवाई।
एडी केडी खता हुई मेरे ते, जे मेरे आपणेयां ही किती पराई।
कदी हिंदी कदी पंजाबी फेरी अंग्रेजी री किती बडाई,
ज्यादा पढने लिखने रे खातर मेरे ते मुंह दित्या फिराई।
बोली भाषा च तबदील हुंदी आई,
पर आपणी बोली रा अस्तित्व दित्या मुकाई।
बच्चेयां जो माँ-बापुए हिंदी होर अंग्रेजी ही सिखाई,
पहाडी पिछडी कने पुराणी बोली ऐ सोच केथी ते आई।
भई एडा भी क्या हुआ ऐ ध्याडा दित्या दिखाई,
पहाडा री संस्कृतिया री पहचान ही दिती मुकाई।
मंडयाली, किन्नौरी, कांगड़ी, सिरमौरी कने चंब्याली,
इना सारिया रा नाम दित्या मुकाई।
केसी भाषा ने मिन्जो बैर नी हर भाषा छैल हुई,
पर आपणी जो होरी ते छोटा समझना केथी री रीत हुई।
अंग्रेजी गाने Modren ते भयागडे पुराने हुए,
पहाडी गलांदा ता ग्वार कने अंग्रेजी री गाली भी मुंहारी शोभा बढ़ाए।
हर भाषा-बोली सिखा पढा ते बोला पर आपणी पहाड़ी मत देंदे भुलाई,
मेरे बगैर तुसारा भी क्या बजूद रहणा ओ भाई ।।

पल्लवी
शास्त्री अन्तिम वर्ष

हिमाचला री कहानी

ओ जी क्या दसीये हिमाचला री कहानी सारे खा हुई गया पानी।
थी एथी देव री भूमि पर आज एथी केडी आई गई नकाली।
सारे शहर डूबी गए, सड़का टूटी गई,
लोका री उमरा री कमाई मिट्टी च मिली गई,
आज ये गल समझ आई की सयाने की बोलये थे
ना कर मान बंदेया इक दिन मिट्टी च मिली जाना।
आज यो ही गल्ला सच हुई गई।
परमात्मा तैं केडा जुल्म कमाया, गरीबा पर केडा दुख पाया।
देखो लोको केडा टाईम आया, ना लाइट रही,ना फोन रहे,
ना ही रही गडियां कुछ भी नि रही गया बदिया।
केसी माता रा पुत बिछड़ी गया, केसी बहना रा भाई,
सारी जमीना री हुई गई सफाई परमात्मा ये केडी मची गई गई तबाही।
हे कमरूनाग ये केडी मची गई तबाही।

पूनम कुमारी
शास्त्री अंतिम वर्ष

प्राक् शास्त्री प्रथम वर्ष

प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष

शास्त्री प्रथम वर्ष (A)

शास्त्री प्रथम वर्ष (B)

शास्त्री द्वितीय वर्ष (A)

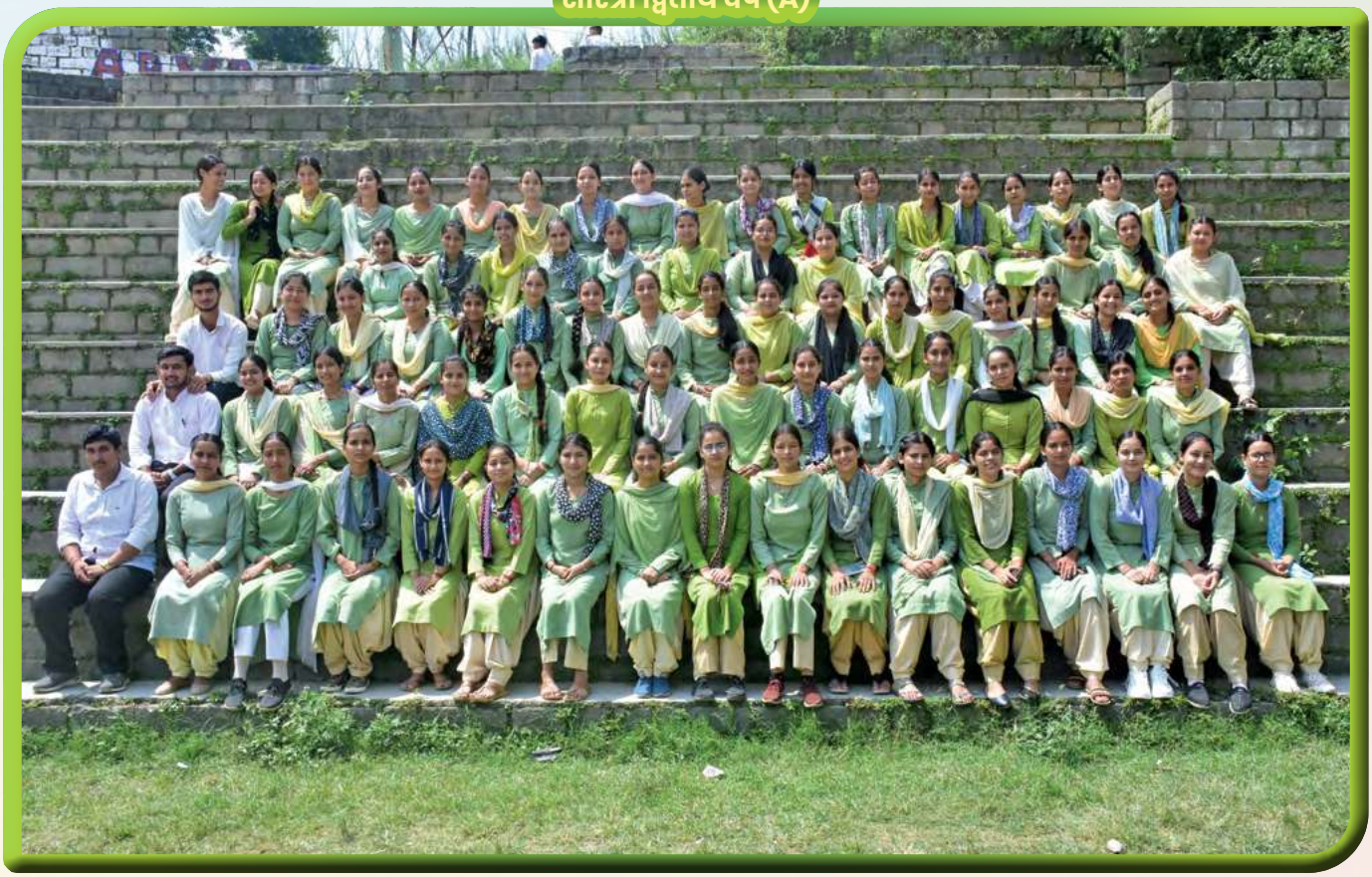

शास्त्री द्वितीय वर्ष (B)

शास्त्री तृतीय वर्ष

Annual Tour 2022

Dental Health Program

Road Safty

Sports Activities

Annual Function

NATIONAL SERVICE SCHEME

NATIONAL
विशेष शिविर
II NOTE 10 | HONEY
08/11/202

NATIONAL SERVICE SCHEME

NSS Camp
CHIEF GUEST

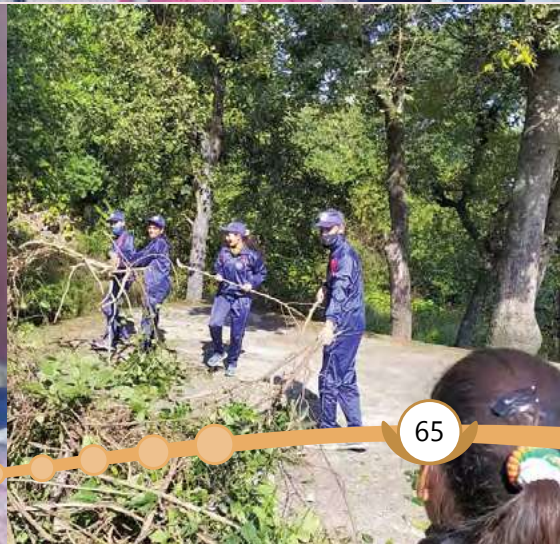

Plantation

SVEEP

Tiranga Yatra

Staff Photograph

भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

शिलामञ्जरी 2023
Prime Printing Press, 98160 68588